Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 42 अंक-06
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 25 अप्रैल से 01 मई 2018 तक
वैशाख शुक्ल दशमी से प्र.ज्येष्ठ कृष्ण एकम् 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

नर से नारायण... पृष्ठ- 2

संतुलित खान पान.. पृष्ठ- 4

जब अदृश्य शक्ति... पृष्ठ- 5

अवधपुरी यह चरित... पृष्ठ- 8

लोकतंत्र या तानाशाही. पृष्ठ- 12

- देश को प्रयोगशाला बना रखा है मोदी सरकार ने
- सड़क नाम परिवर्तन औरंगजेब बनाम ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
- ये है दुनिया के सबसे खतरनाक देश
- जिसे औरंगजेब तोड़ना चाहता था
- भारत विभाजन की त्रासदी के घृणित इतिहास की वास्तविक कहानी

भारत को मिल सकता है ५वीं पीढ़ी का फाइटर जेट

भारतीय सेना को आधुनिकतम हथियार मिले हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

अमेरिकी रक्षा विभाग के एक शीर्ष अधिकारी ने कहा कि लड़ाकू विमान के क्षेत्र में भारत–अमेरिका रक्षा संबंधों का रास्ता एफ–१६ और एफ–१८ लड़ाकू विमानों को खरीदने के भारत के फैसले पर निर्भर करता है। अमेरिका, भारत को इन लड़ाकू विमानों की पेशकश कर रहा है। दक्षिण और दक्षिणपूर्व एशिया के लिए उप सहायक रक्षा सचिव जो, फेल्टर ने कहा कि भारत की ओर से एक सकारात्मक फैसला पांचवीं पीढ़ी की आधुनिक लड़ाकू विमान प्रौद्योगिकी में आगे की राह तय कर सकता है। उन्होंने कहा कि ट्रंप शेष पृष्ठ 11 पर

६ साल के इंतजार के बाद जवानों को अब मिलेंगी बुलेटप्रूफ जैकेट

सेना को सभी सुविधायें दी जाये हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

२००६ में भारतीय सेना ने पहली बार अपने जवानों के लिए सरकार से १.८६ लाख बुलेटप्रूफ जैकेट देने की गुजारिश की थी। उसके नौ साल बाद फैसला लेते हुए रक्षा मंत्रालय ने ६३६ करोड़ रुपये की लागत से १.८६ लाख बुलेटप्रूफ जैकेटों की खरीद के लिए देश की ही एक रक्षा कंपनी के साथ अनुबंध पर हस्ताक्षर किया। मेक इन इंडिया कांट्रैक्ट के तहत यह अनुबंध स्वदेशी रक्षा उत्पादक एसएमपीपी प्राइवेट लिमिटेड ने हासिल किया है। इस कंपनी का बेस दिल्ली में है और ओखला इंडस्ट्रियल एरिया में इसका रिसर्च एंड डेवलपमेंट सेंटर है। इस संबंध में मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि अनुबंध को सफल फील्ड परीक्षणों के बाद अंतिम रूप दिया गया। मंत्रालय ने बयान में कहा १८६,१३८ बुलेटप्रूफ जैकेटों की खरीद के लिए पूंजी खरीद के जरिये एक बड़े अनुबंध पर हस्ताक्षर किया गया है। इसमें कहा गया है कि नयी बुलेटप्रुफ जैकेट लड़ाई में सैनिक को ३६० डिग्री संरक्षण मुहैया कराएगी। जिसमें हार्ड स्टील कोर बुलेट से संरक्षण भी शामिल है। एसएमपीपी को ६३६ करोड़ के इस कांट्रैक्ट के साथ अब तक का सबसे बड़ा ऑर्डर मिला है। इस कंपनी को तीन साल के भीतर इस ऑर्डर की डिलीवरी करनी है, कंपनी ने ऑर्डर पाने के बाद एक बयान जारी कर कहा कि उसकी जैकेट भारतीय सेना द्वारा तय किए गए एकदम सख्त मानकों के अनुरूप हैं। बयान में कहा गया इन बुलेटप्रूफ जैकेटों में बोर न कार्बाइड सिरेमिक है जो बैलिस्टिक संरक्षण का सबसे हल्का मैटेरियल है। सेना ने इस संबंध में कहा है कि इन जैकेटों से जवानों को बेहद सुरक्षा प्राप्त होगी। इसके साथ ही इनको धारण करने के बाद लंबी दूरी की पैट्रोलिंग के साथ बेहद खतरनाक इलाकों में जवानों को ऑपरेशंस में दिक्कत नहीं आएगी। इन शेष पृष्ठ 11 पर

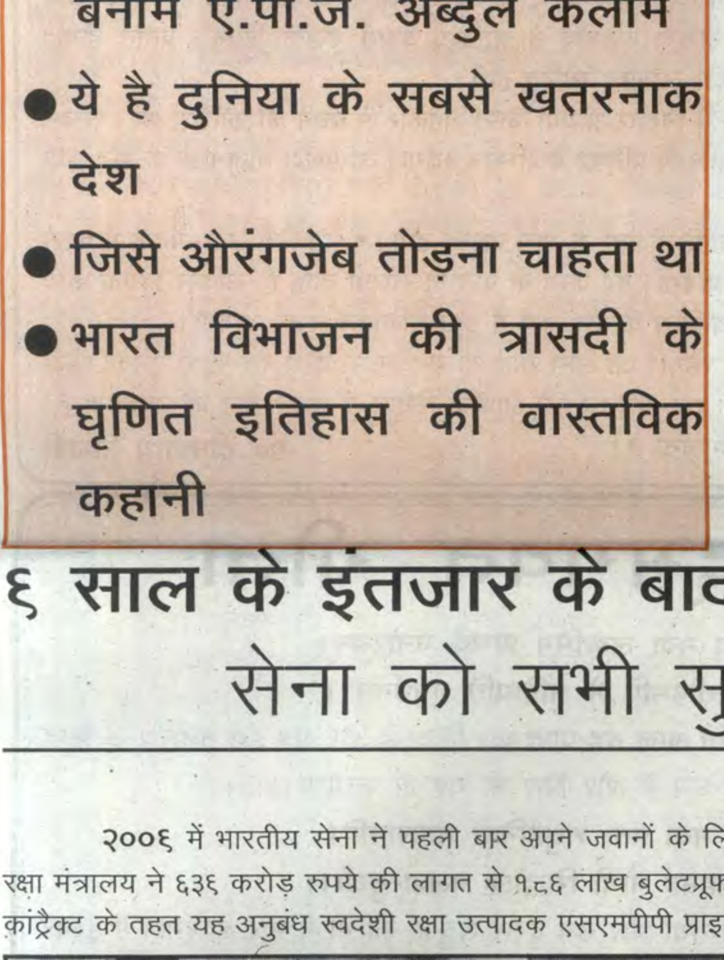

नर से नारायण की कृपा बड़ी

एक बार श्रीकृष्ण और अर्जुन साथ–साथ कहीं जा रहे थे कि मार्ग में उन्हें एक अत्यन्त दरिद्र ब्राह्मण दिखायी पड़ा। उसकी दरिद्रता देखकर श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा–'इसे बेचारे गरीब ब्राह्मण को कुछ धन दे दो।' अर्जुन ने ब्राह्मण को पास बुलाकर कुछ धन दिया। ब्राह्मण उसे सहर्ष लेकर चला गया। दूसरे दिन वही ब्राह्मण वैसी ही अवस्था में फिर भटकता हुआ दिखायी दिया। अर्जुन को सहज ही जिज्ञासा हुई और उन्होंने पूछा–'ब्राह्मण देव! क्या कारण है कि अब भी आप दरिद्रों की भाँति भटक रहे हैं?' ब्राह्मण ने बताया कि जो 'धन मुझे मिला था, वह चोरी चला गया।' अर्जुन को दया आ गयी, अतः इस बार उन्होंने उसे पाँच अशर्फियाँ दी। ब्राह्मण प्रसन्न होकर उन्हें घर ले गया, परन्तु दुर्भाग्यवश इस बार भी उस धन की चोरी हो गयी। अर्जुन ने ब्राह्मण को इस बार फिर दया करके पारसमणि दी। 'मणि लोहे को सोना बना देती है', यह ब्राह्मण को मालूम था। उसने अपनी कृतज्ञता पूर्वक अर्जुन की यह भेंट स्वीकार की। पहले असावधानी के कारण चोरी होने से उसे बहुत दुःख था। इस बार उसने मणि को पानी की मटकी में छिपा दिया और सोच–'मटकी बहुत सुरक्षित स्थान है, अतः सम्भावना नहीं कि पारस वहाँ से चोरी जा सके।' परन्तु भाग्य के आगे किसका वश चलता है। दूसरे दिन ब्राह्मणी उसी मटकी को लेकर जल भरने गयी। उसे स्वच्छ करते समय उसने पारस को प्रत्थर का टुकड़ा समझकर नदी में फेंक दिया। कुछ दिन बाद जब अर्जुन ने ब्राह्मण को पुनः दरिद्र वेश में देखा तो उसके दुर्भाग्य की प्रबलता पर आश्चर्य करते हुए उन्होंने निश्चय कर लिया कि 'आगे से इस भाग्यहीन ब्राह्मण को कुछ नहीं दूँगा।?'

जब स्वयं भगवान् कृपा करके कोई वस्तु देते हैं तो वह, चाहे कितनी भी हीन क्यों न हो, निष्फल नहीं जाती, अपितु भविष्य को सुखद बनाती है।

मनुष्य की दया जहाँ समाप्त होती है, वहीं से भगवान् की दया आरम्भ होती है। जब श्री कृष्ण को अर्जुन का निश्चय ज्ञात हुआ तो इस बार स्वयं उन्होंने ब्राह्मण पर दया करके उसे दो पैसे दान दिया। भगवान् से इतना छोटा दान प्राप्त करने पर उसे आश्चर्य और दुःख तो बहुत हुआ, परन्तु वह भगवान् से अस्वीकार भी कैसे कर सकता था। पैसे लेकर उनमने मनसे वह घर जा रहा था कि मार्ग में उसने देखा कि एक मछुआ अपने हाथ्ज्ञ में तड़पती हुई मछली को लिये जा रहा है।

ब्राह्मण को दया आयी, उसने सोचा–'मेरे इन दो पैसों से क्या होना है। क्यों न इस मछली को ही जीवन दा दे दूँ', यह सोचकर उसने मछुए को अपने मन की बात बतायी। मछुए को दो पैसे से अधिक उस मछली पर कमाने की आशा न थी। ब्राह्मण का सौभाग्य कि मछली पानी में उलट गयी और उसके मुँह से पारसमणि निकल पड़ी ब्राह्मणी द्वारा नदी में फेंकने से मछली ने उसे निगल लिया था। ब्राह्मण की प्रसन्त्र का ठिकाना नहीं रहा। वह जोर–जोर से चिल्लाने लगा–'मिल गया मिल गया।' उसके शोर मचाते ही पास ही एक व्यक्ति बैठा था, जिसने ब्राह्मण की अशर्फियाँ चुरायी थी। जब उसने मिल गया–मिल गया का शोर मचाया तो उसे निश्चय हो गया कि ब्राह्मण ने उसे पहचान लिया है। वह व्यक्ति उसके पास आकर बोलला–'आप इस प्रकार क्यों शोर मचा रहा हैं, अभी आपकी वस्तु देता हूँ।' ऐसा कहकर उसने तुरन्त अशर्फियाँ लौटा दी। इस प्रकार ब्राह्मण की दरिद्रता का अन्त हो गया। इस कथा से हमें यह शिक्ष मिलती कि जब स्वयं भगवान् कृपा करके कोई वस्तु देते हैं तो वह, चाहे कितनी भी हीन क्यों न हो, निष्फल नहीं जाती, अपितु भविष्य को सुखद बनाती है।

डॉ. श्रीमति आशा भार्गव

साप्ताहिक राशिफल

मेष : कुछ लोगों के आर्थिक मामले में इस समय कुछ सुधार होने की गुंजाइश है, लेकिन खर्चे की अधिकता के कारण धनाभाव की स्थिति बनी रहेगी। यदि आप व्यवसाय में साझेदारी करेंगे तो उसके लिए समय अनुकूल है।

वृष : इस सप्ताह कुछ लोगों को आकस्मिक धन लाभ के योग बनेंगें। धार्मिक कार्यो का घर में माहौल बना रहेगा। इन दिनों आपको अनिद्रा की भी शिकायत हो सकती है। किसी मित्र का सहयोग आपको लाभ दिलायेगा। गुरू की महादशा जिन जातको की चल रही है।

मिथुन : इस सप्ताह कुछ लोग धार्मिक क्रिया–कलापों में बढ़–चढ़कर हिस्सस लेंगे किन्तु धार्मिक आडम्बरों से बचें। दाम्पतय जीवन में प्रेम बढ़ेगा और सन्तान के आगमन से घर में खुशी का माहौल बनेगा। रिश्तेदारों से इस समय दूरी ही बनाये रखना आपके लिए लाभदायक होगा।

कर्क : इस सप्ताह प्राइवेट जॉब वाले जातको का प्रमोशन या अन्य किसी प्रकार लाभ आदि होने की सम्भावना है। परिवार में सुख व समृद्धि रहेगी, नवीन योजनायें बनेगी। किसी चीज की चोरी होने की आशंका है। स्त्री सुख में बाधा उत्पन्न हो सकती है।

सिंह : कुछ लोगों के आमदनी के नये स्रोत बनने की संभावना है। अपने कार्य या व्यवसाय के अलावा धर्म–कर्म में भी रूचि बढ़ेगी। इस समय पडोसियों से सावधान रहे अन्यथा समस्या खड़ी हो सकती है। लम्बी यात्रा के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। आपका भाग्य आपके साथ होगा।

कन्या : आप कुछ कर गुजरने की योग्यता का प्रर्दशन करेगें, जिससे आपकी एक नई पहचान बनेंगी। आमदनी की उतनी बढ़ोत्तरी नहीं होगी, जितनी आप अपेक्षा करेंगे। किसी महिला के कारण खर्च बढ़ेगा। अस्थमा रोग से पीड़ित वाले व्यक्तिं विशेष सावधानी बरतें।

तुला : इस सप्ताह आपको संसाधन जुटाने में काफी मशक्कत करनी पड़ सकती है। दूर–दराज के लोगों से नजदीकी सम्बंध बनेंगे। अनावश्यक खर्चो पर विराम लगाने की जरूरत नजर आ रही है। व्यवसाय में हर तरफ कदम फूँक–फूँक कर कदम बढ़ाने की जरूरत है।

वृश्चिक : इस सप्ताह आपको विरोधियों का डटकर मुकाबला करना पड़ेगा जिससे सामाजिक मान–सम्मान में कुछ कमी आ सकती है। परिवार में आर्थिक समस्याओं पर विचार–विमर्श होगा जिससे भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे।

धनु : इस सप्ताह आप जिस व्यक्ति की उपेक्षा करेंगे, सम्भवतः उसी से आपका कोई आवश्यक कार्य पड़ सकता है। रिश्ते–नातों में जरूरी सहयोग व सानिध्य बनायें रखना हितकर प्रतीत होगा। सुनियोजित ढ़ंग से किये गये निवेश लाभप्रद साबित होंगे।

मकर : इस सप्ताह आपकी प्रतिभा में निखार आयेगा किन्तु अहंकार से बचने की कोशिश करें। सम्बन्धों की कद्र करने से ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा व सम्मान बढ़ेगा। लाभकारी योजनाओं के प्रति अति शीघ्रता अहितकर हो सकती है।

कुम्भ : सुविचारित योजनाओं में प्रगतिशीलता के मार्ग प्रशस्त होंगे। पारिवारिक उठा–पटक में पहले की अपेक्षा काफी सन्तुलन नजर आयेगा। हर कार्य के प्रति दिलचस्पी ठीक है, लेकिल प्रत्येक कार्य को स्वंय करना उचित नहीं है। आफिस के रंग–ढंग में कुछ परिवर्तन नजर आयेगा।

मीन : परिवार में खुशी का माहौल रहेगा। जो लोग साझे या सहयोग से कार्य कर रहे हैं उनको थोड़ा सा सावधान रहने की जरूरत है। घर–परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार होने की संभावना है। कार्य व्यापार में वृद्धि होने की संभावना है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्।।

वे सोचा करते हैं कि मैंने आज यह प्राप्त कर लिया है और अब इस मनोरथ के प्राप्त कर लूँग। मेरे पास यह इतना धन है और फिर भी यह हो जायेगा।।१३।।

असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी।।

वह शत्रु मेरे द्वारा मारा गया और उन दूसरे शत्रुओं को भी मैं मार डालूँगा। मैं ईश्वर हूँ, ऐश्वर्य को भोगने वाला हूँ। मैं सब सिद्धियों से युक्त हूँ और बलवान् तथा सुखी हूँ।।१४।।

आढयोऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः।।
अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजलसमावृताः।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ।।

मैं बड़ा धनी और बड़े कुटुम्बवाला हूँ। मेरे समान दूसरा कौन है? मैं यज्ञ करूँगा, दान दूँगा और आमोद–प्रमोद करूँगा। इस प्रकार अज्ञान से मोहित रहने वाला तथा अनेक प्रकार से भ्रमित चित्तवाले मोहरूप जाल से समावृत और विषयभोगों में अत्यन्त आसक्त आसुरलोग महान् अपवित्र नरक में गिरते हैं।।१५–१६।।

3 साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 25 अप्रैल से 01 मई 2018 तक

अध्यक्षीय

लौट आओ माते

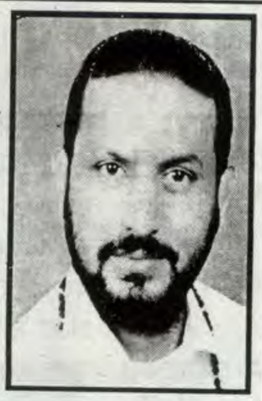

गंगा कनखले पुण्या, कुरुक्षेत्र सरस्वती, ग्रामे वा यदि वारण्ये, पुण्या सर्वत्र नर्मदा। यानी गंगा कनखल में और सरस्वती कुरुक्षेत्र में पवित्र है किन्तु गांव हो या वन नर्मदा हर जगह पुण्य प्रदायिका महासरिता है। पुराणों में रचे गए ऐसे अनेक श्लोकों का जाप आज भी नर्मदा के भक्त करते हैं। अमरकंटक से लेकर खंभात की खाड़ी तक बहने वाली इस नदी की महिमा के बारे में बहुत कुछ कहा गया, लिखा गया। लेकिन अब जो हो रहा है, उसके बारे में क्या कहा जाए। अब तक हमने देश में धर्म की राजनीति देखी, राजधर्म की राजनीति देखी। नदी पर राजनीति भी देखी, लेकिन मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने तो एक साथ हैट्रिक मारी है। यानी धर्म, राजधर्म और नदी तीनों पर राजनीति का ऐसा दांव खेला है कि सब हैरान हैं। पहले उन्होंने नर्मदा यात्रा की राजनीति की। लेकिन उसका लाभ उन्हें नहीं मिला, क्योंकि नर्मदा किनारे बसने वाले किसान, मछुआरों, आदिवासी, ग्रामीण किसी के विस्थापन का दर्द उन्होंने नहीं समझा। नर्मदा बचाओ आंदोलन के सत्याग्रहियों पर सरकारी जोर जबरदस्ती चलती रही। शिवराज सरकार में नर्मदा के तटों को बेरहमी से उजाड़ा गया, जी भर के अवैध उत्खनन हुआ। जिन लोगों ने इसके खिलाफ आवाज उठाई, उन्हें खामोश कर दिया गया। इन सबसे जनता के बीच उनकी छवि कमजोर हो रही थी और यह उपचुनावों के परिणामों में जाहिर हुआ। इधर पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने अपने तरीके से एक और नर्मदा यात्रा की, जो जाहिर तौर पर निजी आयोजन था, लेकिन इसका राजनीतिक असर दिख रहा था। नमामि नर्मदे कहने वाले साधु–संतों का बड़ा तबका दिग्गी राजा के साथ जुट रहा था, जिसका असर विधानसभा चुनाव में दिखता। लिहाजा शिवराज सिंह चौहान ने एक तीर से कई शिकार करने का कदम उठाया। उन्होंने पांच संतों को राज्यमंत्री का दर्जा दे दिया। भय्यू महाराज, कंप्यूटर बाबा, नर्मदानंद महाराज, हरिहरानंद महाराज और योगेंद्र महंत ये पांच संत अब मध्यप्रदेश के विशालकाय मंत्रिमंडल की शोभा बढ़ाने सरकार में शामिल हो गए हैं। मप्र सरकार ने एक आदेश जारी किया है कि दिनांक ३१ मार्च २०१८ को प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रें में, विशेषत नर्मदा किनारे के क्षेत्रें में वृक्षारोपण, जल संरक्षण तथा स्वच्छता के विषयों पर जन जागरूकता का अभियान निरंतर चलाने के लिये विशेष समिति गठित की गई है। इस समिति के पांच विशेष सदस्यों को राज्यमंत्री स्तर का दर्जा प्रदान किया गया है। अब तक संतों के उपदेश सिर माथे होते थे, अब ये पांच विशेष सदस्य यानी पांच संत कहेंगे सरकार का आदेश सिर माथे पर। वृक्षारोपण, जल संरक्षण और स्वच्छता, तीनों ही कल्याणकारी काम हैं और संतों का काम ही परमार्थ करना है। फिर इसके लिए उन्हें सरकारी आदेश से बांधने की क्या जरूरत। इन संतों में से दो संत कंप्यूटर बाबा और योगेंद्र महंत सरकार का विरोध करने की तैयारी में थे। कंप्यूटर बाबा एक अप्रैल से १५ मई तक प्रदेश के प्रत्येक जिले में नर्मदा घोटाला रथ यात्रा निकालकर नर्मदा नदी की बदहाल स्थिति को लोगों के सामने लाने वाले थे। योगेंद्र महंत इसके संयोजक थे। कंप्यूटर बाबा ने नर्मदा किनारे छह करोड़ पेड़ लगाने के सरकारी दावे पर सवाल उठाए थे, वे नर्मदा में जारी अवैध उत्खनन के मुद्दे को भी उठाने वाले थे। लेकिन अब उनका ह्रदय परिवर्तन हो चुका है। उन्होंने कहा है कि सरकार ने साधु–संतों के समिति बना दी है। अब यात्रा निकालने का कोई औचित्य नहीं है। वो ये भी मानते हैं कि सरकारी सुविधाओं के जरिए वो नर्मदा के संरक्षण का काम बेहतर तरीके से कर सकेंगे। कम्प्यूटर बाबा ने कम्प्यूटर का ज्ञान तो खूब प्राप्त किया है, लेकिन शायद वे कुंभनदास के ज्ञान से वंचित रह गए। रहा सवाल नर्मदा को बचाने का, तो एक मुख्यमंत्री और एक पूर्वमुख्यमंत्री की यात्रा के बावजूद उसकी स्थिति में कोई सुधार नहीं दिख रहा है। यूं भी नर्मदा तो धोखा खाने के लिए अभिशप्त है ही। पहले शोणभद्र और जोहिला से मेखल राजा की इस कन्या ने धोखा खाया और चिरकुंवारी नर्मदा कहलाई। प्रेम में छली गई दुखी नर्मदा उल्टी दिशा में बहने लगी। अब एक बार फिर नर्मदा को छला जा रहा है। इस बार दुखी होकर कहीं वह धरती में ही न समा जाए और हम शोणभद्र की तरह गुहार लगाते रहें लौट आओ नर्मदा।

राष्ट्रीय उद्बोधन

चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

देश को प्रयोगशाला बना रखा है मोदी सरकार ने

फेक न्यूज पर सूचना और प्रसारण मंत्रलय के नए दिशा–निर्देश को प्रधानमंत्री कार्यालय ने २४ घंटे के भीतर ही वापस लेने का आदेश दे दिया। इस खबर को इस तरह से भी कह सकते हैं कि स्मृति ईरानी ने पत्रकारों की आजादी छीनने का जो कदम उठाया था, उसे नरेन्द्र मोदी ने रद्द कर दिया। पत्रकार बंधुओं को अब प्रधानमंत्री का आभारी होना चाहिए कि उन्होंने भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में मीडिया की आजादी पर आंच नहीं आने दी। कहावत है देर आयद, दुरुस्त आयद। पर इस प्रकरण में कहा जा सकता है जल्द आयद, दुरुस्त आयद। शायद नरेन्द्र मोदी को यह अहसास हो गया हो कि इस चुनावी साल में पत्रकारों से सीधी मुठभेड़ सही नहीं होगी। वैसे तो कुछेक न्यूज चैनल, अखबार और उनके पत्रकार सरकार की सेवा में दिन–रात लगे हैं। इन्हीं में कुछ कई दफे फेक न्यूज यानी भ्रामक या झूठी खबरें भी इस तरह प्रसारित करते हैं, जिसमें सरकार का फायदा हो और विरोधियों का दुष्प्रचार हो। सोशल मीडिया साइट्स, ट्विटर, फेसबुक और व्हाट्सऐप भी दुष्प्रचार के सर्वोत्तम साधन बन गए हैं। सरकार ने इन पर तो किसी किस्म की सख्ती नहीं दिखाई, लेकिन उन पत्रकारों पर रौब गांठने में देरी नहीं की। जिन्हें भारत सरकार ने पूरी जांच–पड़ताल के बाद मान्यता दी है। आम जनता को इसकी जानकारी शायद ही हो, लेकिन मीडिया से जुड़े लोग जानते हैं कि पीआईबी यानी प्रेस इन्फर्मेशन ब्यूरो से मान्यता हासिल करना मामूली बात नहीं है। इसमें पत्रकार का अनुभव, उसके लेखन, वह किस मीडिया संस्थान से जुड़ा है। यह सब देखकर ही पुलिसिया जांच–पड़ताल के बाद पीआईबी कार्ड जारी किया जाता है। इस कार्ड का इस्तेमाल करके पत्रकार सरकारी कार्यालयों में प्रवेश करते हैं और सरकार की गतिविधियों को जनता तक पहुंचाते हैं। मुख्यधारा मीडिया के इन पत्रकारों को बिरादरी बाहर करने की यह सोच तानाशाही किस्म की लगती है। मोदी सरकार जब मौका मिले, तब आपातकाल की याद देश को दिलाती है। अब वह खुद क्यों मीडिया पर सरकारी तौर अंकुश लगाना चाह रही थी, यह समझ से परे है। वैसे तो जाहिर ही है कि जिन पत्रकारों की आवाज पसंद नहीं आती, उन्हें किस तरह खामोश कर दिया जाता है। लेकिन फेक न्यूज के नाम पर पत्रकारों की अधिमान्यता रद्द करने का विचार बेहद गंभीर मुद्दा है, जो फिलहाल प्रधानमंत्री के दखल के कारण टल गया है। लेकिन आगे नहीं होगा, इसकी कोई गारंटी सरकार की ओर से नहीं आई है। वैसे देश में पत्रकारिता में नैतिकता बनाए रखने के लिए न्यूज ब्राडकास्टर्स एसोसिएशन, इंडिया ब्राडकास्ट फाउंडेशन, प्रेस काउंसिल आफ इंडिया ऐसी तमाम संस्थाएं है। फिर सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय को अचानक फेक न्यूज प्रसारण की इतनी चिंता क्यों हो गई। क्या इसलिए कि जिस मीडिया का इस्तेमाल मोदीजी की लार्जर दैन लाइफ छवि गढ़ने के लिए किया गया था, उसी मीडिया में अब उनकी खामियों की बातें होने लगी हैं। ४ सालों के कामकाज का लेखाजोखा दिया जाने लगा है। वैसे तो इस मामले में प्रधानमंत्री कहीं खुद सामने नहीं आए हैं और फैसला पलटने में भी प्रधानमंत्री कार्यालय का ही नाम लिया जा रहा है, प्रधानमंत्री का नहीं। लेकिन यह बात अटपटी लगती है कि सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय इतना बड़ा कदम उठाने जा रहा हो और प्रधानमंत्री को उसकी भनक भी नहीं लगे। हो सकता है, पहले इस फैसले में नरेन्द्र मोदी की सहमति रही हो और बाद में विरोध देखकर उन्होंने फिलहाल बात को टाल दिया हो। अगर ऐसा है, तो भविष्य के लिए पत्रकारों को सतर्क रहना होगा। और मान लें कि नरेन्द्र मोदी को पता ही नहीं था कि स्मृति ईरानी ऐसा फैसला लेने जा रही हैं, तब भी बात चिंता की है। आखिर यह कैसी सरकार है, जहां कौन क्या करता है, किसी को पता ही नहीं चलता। प्रधानमंत्री नोटबंदी की घोषणा करते हैं, वित्त मंत्री को इसका पता नहीं होता। जीएसटी लागू हो जाता है, लेकिन अधिकारियों को नहीं पता होता कि नियमों का पालन किस तरह से होगा, बाद में नियम बदले जाते हैं। चुनाव आयोग मतदान की तारीखों का ऐलान बाद में करता है, भाजपा आईटी सेल को पहले पता चल जाता है। इराक में ३६ भारतीय चार साल पहले मार दिए जाते हैं, सरकार को चार साल बाद उनकी खबर लगती है। मिनिमम गवर्मेंट, मैक्सिमम गवर्नेंस तो छोड़ें, यहां तो गवर्मेंट और गवर्नेंस दोनों का ही ठिकाना नहीं कि कब कौन क्या कर दे। मोदीजी सरकार चला रहे हैं या देश के साथ प्रयोग कर रहे हैं, जिसमें परिणाम कब क्या हो, कुछ पता ही नहीं चले।

राष्ट्रीय आह्वान

मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

संतुलित खान-पान भी बचाता है हृदय रोग से

✍ हनुमान प्रसाद उत्तम

स्वास्थ्य का खान–पान से बहुत घनिष्ठ संबंध है। शरीर को स्वस्थ बनाने के लिए संतुलित आहार का होना बहुत आवश्यक है, जिसे प्रायः हम भूलते जा रहे हैं। यही कारण है कि लोग तरह–तरह की बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। इन्हीं में से एक है हृदय रोग। जिनके रोगियों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। वास्तव में जिन बातों से हृदय रोग होने की संभावना होती है, उनकी रोकथाम की जा सकती है। सिगरेट, शराब और गलत आहार यह हृदय रोग का कारण हैं। **जब भी दिल तेज धड़कता है तो हृदय रोगी जान बचाने के लिए फटाफट गोलियाँ निगलना शुरू कर देते हैं। परंतु गोलियों पर दिल कितनी देर टिकेगा, साहब। मुख्य तो है खाने-पीने का परहेज। तो जनाब लीजिए इन पर जरा गौर फरमाइए–**

१. आहार में नमक की मात्रा।

२. आहार में चर्बी की मात्रा (कोलेस्ट्रॉल ट्रायग्लिसराइड्स)

३. आहार में कैलोरीज की मात्रा।

४. खाने में रेशेदार (फाइबर) आहार का होना।

१. नमक – हृदय रोगियों को ऐसे खाद्य पदार्थों का परहेज करना चाहिए जिनमें नमक की मात्रा अधिक होती है। दूध से बने पदार्थ, पनीर, मटन और मछली में नमक फलों और सब्जियों से ज्यादा होता है, इसलिए फलों और सब्जियों का ज्यादा सेवन करना चाहिए।

कैसे बचें नमक से – नमक का सेवन कम करने के लिए सबसे बेहतर यही होगा कि नमकदानी को अपनी डाइनिंग टेबल पर से हटा दें। साथ ही सब्जी व आटे में नमक का प्रयोग अति अल्प मात्रा में करें या ना ही करें तो उचित है। हालाँकि भोजन को स्वादिष्ट बनाने में नमक मुख्य है किंतु हृदय रोगियों को नमक की बजाय अन्य मसालों का प्रयोग जैसे नींबू, प्याज, लहसुन, हरी मिर्च, काली मिर्च, सिरका इत्यादि का प्रयोग करना चाहिए।

नमक के अलावा – डिब्बाबंद फूड्स, केचप, सॉस, सब्जियाँ,

मसाला पाउडर, मक्खन इन सभी चीजों से दूर ही रहें, तो अच्छा है। चूंकि इस प्रकार के अधिकांश खाद्य पदार्थों को लम्बे समय तक ठीक बनाए रखने के लिए उनमें नमक की मात्रा अधिक डाली जाती है।

फास्टफूड में नमक – फास्टफूड में भी नमक की मात्रा ज्यादा होती है। चाइनीज फूड में अजीनोमोटो नामक नमक (सोडियम ग्लूटामेट) का प्रयोग होता है। पापड़, अचार, चटनी और नमकीन काजू, पिस्ता आदि में नमक की मात्रा ज्यादा होती है। अतः इनका सेवन भी कम करें।

नमक युक्त दवाइयों से बचें – कुछ दवाइयों में नमक का प्रयोग होता है, इसलिए ऐसी दवाइयों को खरीदने से पूर्व उनके लेबल पर नमक की मात्रा अवश्य देख लें या डॉक्टर की सलाह से नमक युक्त दवाइयों से बचने का प्रयास करें।

मांसाहारी भोजन – इस प्रकार के भोजन से कलेजी, भेजा (मस्तिष्क), गुर्दे आदि एवं केकड़ा, सीपी (सेल फिश) आदि से भी बचना चाहिए।

२. कोलेस्ट्रॉल – हमारे शरीर को एक निश्चित मात्रा में ही कोलेस्ट्रॉल की आवश्यकता होती है, इसीलिए अधिक कोलेस्ट्रॉल युक्त भोजन से बचना चाहिए।

कोलेस्ट्रॉल की मात्रा कम कैसे करें – खाने में तले हुए व चिकने पदार्थों की मात्रा न लें। तलने से बेहतर है उन्हें सेंककर या भूनकर या उबालकर खाइए। आजकल तो बाजार में नॉनस्टिक बर्तन आ गए हैं, जिनमें तेल बहुत कम लगता है।

वैसे हृदय रोगियों के लिए बेहतर यही है कि वे मांसाहार का सेवन न करें।

खाद्य तेल – हृदय रोगियों को घी, मक्खन, मार्जरिन, वनस्पति, नारियल व पाम तेल की मात्रा घटाकर, सफोला, सोयाबीन तेल, सनफ्लावर तेल, मजोला या मक्के के तेल का सेवन करना चाहिए।

लहसुन का प्रयोग कीजिए – लहसुन की २–३ कली का नियमित सेवन करने से भी कोलेस्ट्रॉल की मात्रा कम की जा सकती है। बाजार में मिलने वाली गोलियाँ उतनी लाभदायक नहीं होती जितनी कच्ची लहसुन की कलियाँ।

३. कैलोरी की मात्रा – हृदय रोगियों के लिए मोटापा एक बहुत बड़ा दुश्मन है इसलिए मोटे लोग वजन कम करके ही इस बीमारी को दूर रख सकते हैं। किसी व्यक्ति को प्रतिदिन कितनी कैलोरीज की आवश्यकता होती है, इसकी जानकारी व सलाह डायटिशियन ही दे सकते हैं।

४. रेशेदार आहार – रेशेदार आहार द्वारा रक्त में मौजूद कोलेस्ट्रॉल को कम किया जा सकता है। इसलिए फल व सब्जियों का प्रयोग करें जिनमें रेशे हैं। भारतीय चिकित्सकों के एक दल का दावा है कि यदि दिल के रोगी फलों व सब्जियों की एक निश्चित मात्रा लें, तो दिल का दौरा पड़ने की आशंका बहुत हद तक घट सकती है। उपरोक्त दल ने २०० रोगियों पर शोध करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला है कि शोध के दौरान इन रोगियों को तीन मास तक रोजाना कम से कम ४०० ग्राम की मात्रा में फल, सब्जी और दालों से युक्त आहार दिया गया। इसने उनकी मृत्यु दर तथा हार्ट अटैक की संभावना को स्पष्ट रूप से घटा दिया।

अध्ययन के लिए अमरूद, अमरख, अंगूर, करेला और पत्तेवाली सब्जियों को चुना गया था। मैदे से बने पदार्थों का भोजन बिल्कुल बंद कर दें। गेहूँ का आटा, लाल चावल, ब्राउन ब्रेड, जौ व मक्के के आटे को खाने के लिए प्रयोग करना चाहिए। साथ ही छिलके युक्त दालों का सेवन करना चाहिए चूंकि उनमें रेशे अधिक होते हैं।

ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाले आहार से रखें वजन और डायबिटीज कन्ट्रोल

मोटापा अपने साथ कई बीमारियों को लेकर आता है और इसमें प्रमुख है डायबिटीज। अगर कोई एक बार डायबिटीज का शिकार हो गया तो आजीवन उसकी गिरफ्त में रहता है, क्योंकि यह ऐसी बीमारी है जिससे छुटकारा नहीं मिल सकता बल्कि खानपान और व्यायाम के जरिए इसके दौरे को कम किया जा सकता है, इसे नियंत्रण में रखा जा सकता है। लेकिन शायद ही आपको पता हो कि **लो ग्लाइसेमिक इंडेक्स** वाले आहार का सेवन करके आप वजन और डायबिटीज पर नियंत्रण रख सकते हैं।

लो ग्लाइसेमिक इंडेक्स का असर : दरअसल जिस आहार में ग्लाइसेमिक इंडेक्स की मात्रा कम होती है वह ब्लड ग्लूकोज के स्तर को बढ़ाता नहीं बल्कि उसे सामान्य रखता है। इससे खून में ग्लूकोज की मात्रा नहीं बढ़ती और मोटापे के साथ–साथ डायबिटीज जैसी खतरनाक बीमारी के होने की संभावना भी कम होती है। इसलिए खाने में लो ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाले आहार का सेवन करना चाहिए।

क्या है ग्लाइसेमिक इंडेक्स : दरअसल ग्लाइसेमिक इंडेक्स एक प्रकार का अंक है जिसकी गणना आसानी से की जा सकती है। अगर आपको २५ ग्राम ग्लूकोज दिया जाये और कुछ समय बाद आपके रक्त में ग्लूकोज के स्तर की जाँच की जाए तो आपने जो खोया है और रक्त में मौजूद ग्लूकोज की मात्रा के भागफल को १०० से गुणा (मल्टीप्लाई) करने पर खाए हुए पदार्थ का ग्लाइसेमिक इंडेक्स आ जायेगा। यानी ग्लूकोज और खाए गये पदार्थ की वह मात्रा जिसके सेवन से रक्त में ग्लूकोज का स्तर समान रूप से बढ़ता है, इसके अनुपात को १०० से मल्टीप्लाई करने पर उस पदार्थ का ग्लाइसेमिक इन्डेक्स प्राप्त हो जाता है। **ऐसे आहार का सेवन कीजिए जिसमें ग्लाइसेमिक इंडेक्स ५० से अधिक न हो।**

कार्बोहाइड्रेट है यह : कार्बोहाइड्रेट हमारे शरीर को स्वस्थ रखने के लिए बहुत जरूरी है, यह वजन कम करता है और डायबिटीज को होने से बचाता है। **कार्बोहाइड्रेट २ प्रकार का पाया जाता है– पहला वो जिनका ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता है, इन्हें कॉम्प्लेक्स कार्बोहाइड्रेट भी कहा जाता है। यह शरीर के लिए अच्छा माना जाता है** और **दूसरे ज्यादा ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाले होते हैं, जिसे सिंपल कार्बोहाइड्रेट भी कहा जाता है। कॉम्प्लेक्स कार्बोहाइड्रेट से ब्लड ग्लूकोज (शुगर) का स्तर मामूली रूप से बढ़ता है जबकि ज्यादा ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाले सिंपल कार्बोहाइड्रेट तेजी से ब्लड ग्लूकोज स्तर को बढ़ाते हैं।** ज्यादा ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाले कार्बोहाइड्रेट कई क्रोनिक बीमारियों को बढ़ावा देते हैं जैसे–टाइप २ डायबिटीज, हाई ब्लडप्रेशर, मोटापा और मोटापे के कारण होने वाली अन्य बीमारियाँ।

लो ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाले आहार : कुछ खाद्य जिनके ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम हैं–ब्रेड ७०, परांठा ७०, चावल ७२, बाजरा ७१, इडली ८०, उपमा ७५, दूध ३३, दही ३३, ८७, ताजे फलों में २०, छोले ६५, सोयाबीन ५६, राजमा २६, अंकुरित चने ६०। अंडे, मांस और मछली भी लो ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाले आहार होते हैं।

इन आहार के साथ–साथ नियमित रूप से शरीर की जाँच अवश्य कराएँ, अगर किसी प्रकार की स्वास्थ्य समस्या है तो चिकित्सक से सलाह अवश्य लीजिए।

जब अदृश्य शक्ति ने माँ विन्ध्यवासिनी के पास पहुँचाया

✍ पं. गोपीनाथ कविराज

भोलानाथ की अवस्था चौदह या पन्द्रह वर्ष की हुई होगी। किशोर अवस्था अब भी समाप्त नहीं हुई थी। एक दिन सीढ़ी से नीचे उतरते समय हठात् एक पागल कुत्ते ने बालक के पैर में काट लिया। बालक कुछ अनमना-सा असावधान दशा में नीचे उतर रहा था। कहीं कुत्ता है और वह अचानक काट खायेगा, इसकी कल्पना तक बालक के मन में न थी। काटने का प्रभाव थोड़े ही समय के भीतर मालूम होने लगा। समस्त देह में ऐसी जलन होने लगी कि रहा नहीं जाता था। बालक ने कुत्ते के काटने का हाल तुरन्त घरवालों से बताया। उसके दादा चिकित्सक थे। अन्य डॉक्टरों तथा वैद्यों की सहायता से उन्होंने स्वयं दवा आरम्भ की। नियमपूर्वक इलाज किये जाने पर भी बालक की दशा शीघ्र ही अत्यन्त शोचनीय हो गई। जब स्थानीय चिकित्सा से कोई लाभ न हुआ, बालक को गोंदलपाड़ा ले गये। वहाँ की प्रसिद्ध औषधि खिलाई। किन्तु उससे भी उपकार न हुआ। इधर विष भयंकर रूप से पूरे शरीर में फैलने लगा। असह्य वेदना से बालक चीख मार कर रोने चिल्लाने लगा। ऐसी दशा में बालक को गोंदलपाड़ा से तुरन्त हुगली ले गये। वहाँ एक आटे की चक्की का मालिक भोलानाथ के काका का बालकपन का साथी था। उसी के घर में ठहरना हुआ। हुगली में भी कुत्ते के विष के बड़े-बड़े इलाज हुए; परन्तु सब व्यर्थ। अब बालक की आशा जाती रही। उसने समझ लिया कि-बस, उसकी जीवन-रक्षा का कोई भी उपाय अब नहीं है।

उस समय सन्ध्या आ पहुँची थी। सूर्य-देव अस्त होने जा रहे थे। पश्चिम आकाश में लालिमा छा रही थी और भागीरथी के जल पर उसका रक्त-वर्ण प्रतिबिम्ब पड़कर विकीर्ण कर रहा था। सुख-स्पर्श वायु हलके-हलके गंगा जल को हिला रही थी। छोटी-छोटी लहरियाँ गंगा के वक्ष पर खेल-कूद करने में लगी थीं। इस दृश्य को बालक एकटक होकर देख रहा था। मन उसी में तल्लीन था। वायु के झोंकों से संचालित गंगा-तरंगों की तरह उसके बाल हृदय में भी आशा एवं आकांक्षा की कितनी-कितनी लहरें उठतीं और विलीन हो रही थीं, इसका इतिहास कोई क्या जाने। अस्तोन्मुख सूर्यदेव को देखकर बालक के मन में भी यही विचार आया कि मेरा जीवन-सूर्य भी इसी प्रकार अब डूबने वाला है। मन में जाने क्या सोचता हुआ बालक वहाँ से उठकर धीरे-धीरे गंगा तट पर आ पहुँचा। शायद मन में यह इच्छा हुई कि स्निग्ध सलिला जाह्नवी की शीतल गोदी में अपने को अर्पण कर दूँ और हमेशा काल के लिए संतप्त प्राणों की ज्वाला को शान्त कर दूँ; किन्तु गंगा के निकट पहुँचकर उसने एक ऐसा दृश्य देखा कि उससे वह चकित हो गया। उसे आत्म-विस्मृति हो गई। वह चित्र लिखे की तरह स्तब्ध खड़ा हुआ, उस अपूर्व दृश्य को एकटक निहारने लगा। उसने देखा कि गंगा की धारा में एक जटा-जूटधारी सौम्यमूर्ति संन्यासी बार-बार पानी में डूबता है और बार-बार ऊपर आता है। गंगाजल साधु के साथ-साथ एक स्तम्भ की तरह ऊपर की ओर उठता है और फिर से नीचे गिर जाता है। संन्यासी का मुख मण्डल प्रशान्त था, दोनों चक्षु उज्ज्वल एवं मधुर थे। देखने से ऐसा लगता था कि अलौकिक ज्ञान तथा करुणा दोनों एक साथ मिलकर दुःख भरी धरणी के उद्धार के लिए स्वयं आकर प्रकाशमान हुए हों। संन्यासी त्रिकालज्ञ महापुरुष थे। जिनके लिए कोई बात अज्ञात अथवा अज्ञेय नहीं थी। बालक की ओर देखते ही उन्होंने बालक का सारा हाल जान लिया और उसकी मनोवेदना को पूरी तौर से समझ लिया। उन्होंने अत्यन्त स्नेह, मधुर एवं गम्भीर स्वर से बालक को पुकार कर कहा-"बच्चा! इतना क्यों घबराते हो? दर्द होता है? अच्छा, हम सब अच्छा कर देंगे।" यह कहकर वे तीर पर आ गये और बालक के सिर पर अपना हाथ रख दिया। उनके स्पर्श मात्र से ही बालक को ऐसा जान पड़ा कि उसके सिर पर न जाने कितनी ज्यादा बरफ की ठंडक पहुँच रही है। ऐसा मालूम होने लगा मानो उसकी शिराओं और धमनियों में रक्त की जगह शीतल अमृत की धारा प्रवाहित हो रही है। देखते-देखते उसकी समस्त ज्वाला-यन्त्रणा बिल्कुल दूर हो गई। मृत्यु का भय और विपत्ति की आशंका सब कट गई और जीवन में नवीन आशा का संचार हो गया। संन्यासी ने वहीं से एक औषधि लाकर खिला दी और उसको घर लौट जाने को कहा। बालक घर वापस आ गया। उस समय उसकी रोगजनित यन्त्रणा बिल्कुल मिट गई थी। दूसरे दिन फिर से वह गंगा किनारे उसी स्थल पर पहुँचा और महापुरुष को पुनः पुकार नम्र स्वर में उनसे प्रार्थना की-"प्रभो, आपने मुझे जीवनदान दिया है। मैं आपको अब छोड़ नहीं सकता। आप मुझे दीक्षा दीजिए और धर्म-जीवन का पथ-प्रदर्शन करिये।" महापुरुष ने बालक को एक आसन सिखा दिया और एक बीज मन्त्र दे दिया और कहा-"इस आसन का अभ्यास करो और इस मन्त्र का जप करो। इससे ही तुम्हारी देह शुद्धि होगी। हम तुम्हारे गुरु नहीं हैं। जो तुम्हारे गुरु होंगे, वे अन्यत्र हैं, यहाँ से दूर हैं। वे ही तुम्हारी मनोकामना पूरी करेंगे। उनकी कृपा से तुम्हारे सब अभाव दूर होंगे और तुम धर्म-जगत में शीर्ष स्थान प्राप्त करोगे। इस प्रकार तुम्हारा जीवन सार्थक होगा। इस समय तुम अपने घर चले जाओ। हम गंगासागर जाते हैं। जब समय आयेगा, तब हम तुमको संग लेकर तुम्हारे गुरुदेव के पास पहुँचा देंगे। बस निश्चिन्त रहो।"

भोलानाथ के मन की परीक्षा लेने के लिए महापुरुष ने पूछा-"क्या तुम मेरे साथ उस दुर्गम स्थान में जाने का साहस करते हो? क्योंकि तुम तो अभी बालक हो, इसीलिए तुमसे पूछ रहा हूँ! यदि चलने की उत्कट इच्छा है, तो सन्ध्या के बाद हमारे पास आ जाना-हम तुम दोनों को अपने साथ ले चलेंगे।"

संन्यासी की ऐसी आश्वासनपूर्ण वाणी सुनकर भोलानाथ के हर्ष का कोई पार न रहा। ठीक समय पर वह अपने साथी समेत निर्दिष्ट स्थान पर संन्यासी के सामने उपस्थित हो गया। संन्यासी ने उन दोनों की आँखों पर पट्टी बाँध दी और उनको अपने साथ लेकर वे आगे बढ़े।

अंधेरे जंगल से होकर संन्यासी धीरे-धीरे चलने लगे। दोनों युवक उनका हाथ पकड़े-पकड़े उनके पीछे चल रहे थे; किन्तु किन स्थानों को पार करते हुए, किस मार्ग से, किधर जा रहे थे, इसका न तो भोलानाथ को भान था और न ही हरिपद को ही। ऐसा मालूम पड़ता था मानो किसी कोमल सुख-स्पर्श बिछौने के ऊपर होकर वे आगे बढ़ रहे थे। यद्यपि वे लोग साधारण गति से ही चले जा रहे थे तथापि स्पष्ट रूप से ऐसा जान पड़ता था, मानो किसी अनैसर्गिक शक्ति के आकर्षण से वे आकाश मार्ग से जा रहे हों। पानी की लहरों को चीरते हुए जैसे जलचर प्राणी अथवा नाव चलती है, वायुमंडल में कम्पन उत्पन्न करके प्रतिस्तर में वायु की लहरों को भेद कर जैसे वायुयान अथवा व्योमचारी पक्षी स्वच्छन्द विचरण करते हैं इसी प्रकार वे भी चले आ रहे थे। यद्यपि प्रतीत होता था कि वे दोनों पैदल ही चले जा रहे हैं तथापि थोड़ी ही देर बाद वे समझ गये थे कि यह चलना मामूली चलना नहीं है। समस्त रात्रि इस प्रकार पार होने पर जब सवेरा हुआ, तब महापुरुष ने दोनों के नेत्रों पर से पट्टी खोल दी। चारों ओर देखकर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। देखते क्या हैं कि किसी पर्वतश्रेणी के समीप एक देवालय है, उसके बगल में लोग खड़े हैं। मन्दिर के भीतर अष्टभुता देवी की मूर्ति विराजमान थी। वहाँ पर एक भी बंगाली को आसपास न देखकर उनका अनुमान हुआ कि वे किसी दूर देश में आ पहुँचे हैं। पूछने पर मालूम हुआ कि उस स्थान का नाम 'विन्ध्याचल' है और मन्दिर में विराजमान देवी स्वयं 'विन्ध्यवासिनी' हैं। एक रात्रि में ही नदी और पर्वत-मालाओं को लांघकर पैदल इतनी दूर कैसे आ गये, यह उनकी समझ में नहीं आ रहा था। उन दोनों को अष्टभुजा मन्दिर के पास एक सुरक्षित स्थान में छोड़कर संन्यासी जी अन्तर्द्धान हो गये। जाते समय कह गये कि तुम लोग यहाँ कोई भय मत करना। हम कुछ दिन बाद आकर तुमको अपने साथ ठीक यथास्थान ले चलेंगे।

इस पर अतिसमीप चारों ओर निबिड़ वन-भूमि निहार कर हिंसक जन्तुओं की आशंका से मन में कुछ भय सा लगने लगा। जो कुछ भी हो, इस प्रकार दुश्चिन्ता में पड़े-पड़े कई घंटे बीत चुके; तब देखा कि एक श्याम वर्ण ब्राह्मण व्यक्ति उन दोनों के लिए भोजन

शेष पृष्ठ 11 पर

सड़क नाम परिवर्तन औरंगजेब बनाम ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

✍ वेद त्रिपाठी

दिल्ली में औरंगजेब रोड का नाम परिवर्तित करके ए. पी.जे..अब्दुल कलाम मार्ग करने से देश के एक तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग के पेट में दर्द होना कोई हैरत की बात नहीं है। जो लोग इस वर्ग की फितरत से परिचित हैं उन्हें यह बखूबी से मालूम है कि यह वर्ग ऐसा कोई मौका चूकने से कभी बाज नहीं आता है जिससे देश में साम्प्रदायिक विभाजन की खाई को और ज्यादा से ज्यादा गहरा किया जा सके तथा वर्ग–विशेष की भावना को ज्यादा से ज्यादा उकसाया जा सके। फिर चाहे उससे राष्ट्र को कितनी ही हानि क्यों न उठानी पड़े। यहाँ खेद मात्र यह नहीं है कि इस वर्ग के निशाने पर इसकी विचारधारा के विरोधी रहते हों और उन्हें ये किसी भी कीमत पर नेस्तनाबूद करना चाहते हों बल्कि असल खेद और दुख तो इस बात का है कि इनके इस प्रकार के अंध आचरण और मुखर आलोचना का शिकार अगर राष्ट्रहित और राष्ट्रीय एकता भी होती है, तो इन्हें ऐसा करने में न तो कोई संकोच लगता है और न किसी प्रकार की लज्जा।

नाम परिवर्तन इतिहास से छेड़छाड़ कैसे?

यह कौन नहीं जानता कि इस देश में हजारों ऐसे स्थल हैं जिनके नाम परिवर्तित हुए हैं और नाम परिवर्तन करने के मात्र से इतिहास बदल जाता हो, यह दावा करना तो एक बड़ी ही नादानी भरा विचार हो सकता है। इतिहास तो गवाह है और नाम परिवर्तन मात्र को इतिहास बदलने की साजिश करार करना वैसा ही बचकाना तर्क है जैसाकि किसी व्यक्ति का नाम परिवर्तन कर देने से, उसका इतिहास बदल देना या उसके पूर्वकाल को झुठला देना। समाचार–पत्रों में लगभग नित्य ही व्यक्तियों के नाम परिवर्तन के विज्ञापन आते हैं तो क्या उनके जीवन का पूर्व काल 'काल कलवित' हो जाता है या विद्रूप हो जाता है। इतिहास को पूर्वकाल का तथ्य–बोध है और तथ्य तो तथ्य हैं। किसी स्थान के नाम में परिवर्तन से इन तथ्यों को कैसे मिटाया और बदला जा सकता है? किसी स्थान के नाम से छेड़छाड़, इतिहास से छेड़छाड़ कैसे हो सकती है? ऐसा दावा तो साधारण विज्ञ व्यक्ति भी नहीं करता है। फिर यदि ऐसा दावा स्वयम् कुछ इतिहासकार करें तो जाहिर तौर पर यह कोई जानीबूझी साजिश ही हो सकती है। यहाँ यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि यह साजिश नाम बदलने की पेशकश के समर्थकों की ओर से नहीं, बल्कि यह साजिश वस्तुतः नाम बदलने के विरोध करने वालों की तरफ से ही है।

उक्त संदर्भ में एक और बड़ी ही हैरत की बात तो यह भी है कि इतिहासकारों के इस वर्ग को जितना ममन्तिक दर्द औरंगजेब रोड का नाम बदलने से हुआ, उतना तो पहले कभी नहीं हुआ था। नामान्तरण तो इससे पूर्व में बहुत बार हुए थे। कनॉट प्लेस का नाम राजीव चौक, मिन्टो ब्रिज का नाम आसफ अली मार्ग, इरविन अस्पताल का नाम लोकनायक जयप्रकाश अस्पताल, विलिंगडन अस्पताल का नाम राम मनोहर लोहिया अस्पताल, लेडी हार्डिंग अस्पताल का नाम सुचेता कृपलानी अस्पताल, आगरा में विक्टोरिया पार्क का नाम शाहजहाँ पार्क और हीविट पार्क का नाम पालीवाल पार्क रखा गया तब किसी 'महान इतिहासकार' को इसमें इतिहास से साजिश नजर नहीं आई। तब किसी को यह नहीं लगा कि इतिहास के एक हिस्से को झुठलाया जा रहा है।

अतः यहाँ यह बात विचार करने की है कि आखिर इस तथाकथित बौद्धिक खेमे को औरंगजेब पर ही इतना प्रेम क्यों उमड़ पड़ा? क्या उल्टे यह साजिश किसी एक ऐसे बादशाह की स्मृति को किंचित मात्र भी धूमिल न होने देने की तो नहीं, जो आधुनिक भारत में साम्प्रदायिक वैमनस्य की एक बहुत बड़ी फांस है। इस वर्ग की मंशा कहीं यह तो नहीं कि उस बादशाह की स्मृति को हमेशा तरोताजा रखा जाये, जिस बादशाह के शासनकाल की धर्मोन्मादी नीतियाँ एक वर्ग के मन में दुखते काँटे की तरह आज भी दर्द दे रही हैं? इस वर्ग को संभवतः यही भय सता रहा है कि यदि साम्प्रदायिक विद्वेष के इन ऐतिहासिक काँटों को निकालने का कोई ऐसा ही सिलसिला चल पड़ा तो कहीं ऐसा न हो कि देश में एक स्वस्थ सामाजिक सौहार्द का निर्माण हो जाए और उनकी वर्ग विद्वेष फैलाने की पुरानी साजिश का पर्दाफाश हो जाए। वस्तुतः विश्व से अपनी विचारधारा का जनाजा उठने के बाद इस वर्ग को अपने अस्तित्व और पहचान की गहरी चिन्ता सता रही है। ऐसे में उनका अब एक ही सहारा है कि जैसे–तैसे साम्प्रदायिक वैमनस्य की आग को जलाये रखना और अपने टूटते हुए बौद्धिक तिलिस्म की रक्षा करना। किन्तु वे यह समझने में नितान्त असफल सिद्ध हो रहे हैं कि समय उनका साथ छोड़ चुका है और उनका भविष्य उनसे विमुख हो चुका है। वर्गवादी विखंडन फैलाने, राष्ट्रीय अस्मिता को कोसने, राष्ट्रीय स्वाभिमान को निरन्तर कोंचने और भारतीय जनमानस को हीनभावना से ग्रसित करने वाले हथियारों की धार अब बेहद मोथरी हो चुकी है तथा भारत राष्ट्र एक स्वस्थ और संगसिठत राष्ट्रहोने की पुनर्रचना की प्रक्रिया से गुजर रहा है।

नाम परिवर्तन पर हंगामा, किन्तु ऐतिहासिक विरासतों के नष्ट होने पर चुप्पी

यह बड़ा ही स्पष्ट है कि किसी स्थान के केवल नाम परिवर्तन से इतिहास से न तो छेड़छाड़ होती है और न इतिहास बदला जा सकता है। ऐसा करना किसी भी प्रकार से इतिहास से किसी प्रकार का अन्याय भी नहीं है। किन्तु इसके विपरीत ऐतिहासिक विरासतों और ऐतिहासिक धरोहरों को नष्ट करना अवश्य ही इतिहास के साथ अन्याय और खिलवाड़ है। वस्तुतः यह तो निश्चित ही एक घोर अपराध है। किन्तु खेद है कि आज जो वर्ग औरंगजेब रोड के नाम परिवर्तन से इतना बौखलाया हुआ है वह विश्व में और भारत में भी नष्ट हो रही और जानबूझ कर भी नष्ट की जा रहीं ऐतिहासिक धरोहरों के धराशायी होने से बिल्कुल व्यथित नजर नहीं आता है। जब अफगानिस्तान के बामियान में भगवान बुद्ध की प्रतिमा का शर्मनाक विखंडन हुआ तो यह वर्ग खामोश था। यही नहीं अफगानिस्तान के तत्कालीन अलकायदा के शासन ने तो म्यूजियमों में रखी मूर्तियों और ऐतिहासिक अवशेषों तक को चूर–चूर कर डाला, तब भी इस विशेष वर्ग की तन्द्रा भंग नहीं हुई। वस्तुतः इतिहास को नष्ट करने या उससे छेड़छाड़ का प्रयास तो अलकायदा के शासनकाल में अफगानिस्तान में सर्वाधिक शर्मनाक ढंग से हुआ था। इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड सीरिया (आई.एस.आई.एस.) ने तो इससे आगे बढ़कर वे शहर के शहर हमेशा–हमेशा के लिए नेस्तनाबूद कर डाले जो विश्व द्वारा ऐतिहासिक विरासत के नगर घोषित किए गए थे। पलमायरा, हातरा, निरमुद, खोरसाबाद, निमरूद, मोसुल, बोसरा इसका जीता–जागता उदाहरण है। इन शहरों की इस्लामी जेहादियों ने ईंट से ईंट बजा दी। यही नहीं उन्होंने भी अलकायदा की तरह म्यूजियमों में सैकड़ों वर्षों से संरक्षित मूर्तियों तथा अन्य भी तमाम कलाकृतियों को भी बड़ी बेरहमी से चूर–चूर कर डाला, जिनका आज अस्तित्व भी शेष नहीं है। किन्तु इन सभी घटनाओं को इस तथाकथित 'धर्मनिरपेक्ष इतिहासकार' के वर्ग ने बड़े ही निश्चिन्त और निर्विकार भाव से देखा। तब वे न तो चिन्तित दिखे, न मुखर हुए और न ही उनके आँसू बहे।

अपने देश में भी कश्मीर जब से इस्लामी आतंकवाद की चपेट में आया है, वहाँ सैकड़ों पुराने और ऐतिहासिक मंदिर नष्ट किये जा चुके हैं या ढहाए जा चुके हैं। तमाम पुरातन स्थलों के नामों का इस्लामीकरण हो चुका है। किन्तु इस सब पर धर्मनिरपेक्ष खेमे द्वारा कोई विरोध तो दूर, कोई प्रतिक्रिया भी नहीं आई। इसके विपरीत दिल्ली में तो औरंगजेब रोड का नाम ही बदला गया है। यह रोड न तो औरंगजेब ने बनवाई थी और न ही यहाँ कोई ऐसी ऐतिहासिक घटना हुई थी, जिससे औरंगजेब का कोई जुड़ाव रहा हो। यही नहीं औरंगजेब ने जहाँ कहीं भी कोई निर्माण करवाए, देश का पुरातत्व विभाग उनका उचित संरक्षण और रखरखाव ही कर रहा है। चाहे वह ज्ञानवापी मस्जिद हो या मथुरा के कटरा केशवदेव स्थित मस्जिद। अहमद नगर में जहाँ औरंगजेब की मृत्यु हुई वहाँ उसकी मजार का भी उचित रूप से संरक्षण हो रहा है। ऐसी स्थिति में यह निश्चित रूप से बड़ी ही विचित्र बात लगती है कि केवल एक सड़क के नाम परिवर्तन से (जिससे औरंगजेब का ऐतिहासिक रूप से किंचित मात्र भी लेना–देना नहीं है) इतिहासकारों के इस एक विशिष्ट वर्ग के पेट में इतनी खलबली क्यों है और वे इसे इतिहास से छेड़छाड़ की बात क्यों कह रहे हैं?

नामकरण के कारण और उद्देश्य

किसी स्थान का नाम विशिष्ट व्यक्ति के नाम पर इसलिए हो कि उसका उस विशिष्ट स्थान से कोई गहरा सम्बन्ध रहा है, तो जहाँ तक सम्भव हो उस स्थान को उसके नाम से पहचाना जाए, तो यह निश्चित ही एक स्वागत योग्य बात है। उदाहरणार्थ यदि किसी व्यक्ति का कहीं जन्म हुआ है या वह शेष पृष्ठ 11 पर

भारत विभाजन की त्रासदी के घृणित इतिहास की वास्तविक कहानी

साभार-गौरव घोष

(पिछले अंक का शेष)

मुस्लिम लीग का दिल्ली अधिवेशन १९१८

१९१८ में मौलाना फज्ल–उल–हक ने मुस्लिम लीग के दिल्ली अधिवेशन के अध्यक्षीय भाषण में कहा कि "मेरी दृष्टि में भारत में इस्लाम का भविष्य चिन्ताओं व निराशाओं से भरा हुआ है। विश्व में जहाँ कहीं भी मुस्लिम सत्ताओं का पराभव हुआ उसका दुष्प्रभाव भारत में इस्लाम की स्थिति पर भी पड़ा।" प्रथम विश्वयुद्ध की १९१८ में समापित के बाद गाँधी जी के कांग्रेस में सक्रिय होने पर मुसलमानों के पक्ष में कांग्रेस ने खिलाफत आन्दोलन का साथ दिया परन्तु ब्रिटेन व टर्की में १९२१ में परस्पर समझौता होने पर खलीफा के विषय पर चलाया गया आन्दोलन भारत में भी गति नहीं पकड़ सका। कांग्रेस का हिन्दू मुस्लिम एकता का नारा भी मुस्लिम राजनीति को प्रभावित नहीं कर सका।

मुस्लिम लीग का इलाहाबाद अधिवेशन १९३०

२९ दिसम्बर १९३० को सर अल्लामा इकबाल की अध्यक्षता में मुस्लिम लीग का वार्षिक अधिवेशन इलाहाबाद में संपन्न हुआ। इस अधिवेशन में १९०६ व १९१६ के पृथक मुस्लिम निर्वाचन क्षेत्र की माँग से आगे बढ़कर पृथक मुस्लिम राज्य (Separate Muslim State) की माँग का प्रस्ताव ब्रिटिश सरकार के सामने प्रस्तुत किया गया। इकबाल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि – 'जिन राज्यों में मुसलमान अधिक संख्या में हैं वहाँ उन्हें राज्य प्रशासन का पूर्ण अधिकार दिया जाना चाहिए। इसके साथ असम व सिन्ध जैसे राज्यों का पुनर्गठन इस प्रकार किया जाना चाहिए कि वे पूर्णतः मुस्लिम बहुल प्रदेश बन सकें।' मौलाना मोहम्मद ने कहा कि "जब तक संविधान संशोधन करके मुस्लिम बहुत राज्यों (प्रदेशों) का निर्माण सरकार नहीं करती, मैं कहना चाहता हूँ और चेतावनी देना चाहता हूँ कि ऐसा न होनेपर भारत में गृहयुद्ध होगा। इस बारे में कोई भ्रम नहीं चलेगा। (Let there be no mistake about it.) इकबाल के अध्यक्षीय भाषण के अनुसार मौलाना मोहम्मद अली ने १ जनवरी १९३१ को (अधिवेशन के २ दिन बाद) ब्रिटेन के प्रधानमंत्री को एक पत्र लिखकर मुसलमानों के लिए अलग राज्य की माँग को आग्रहपूर्वक प्रस्तुत किया। साथ ही मौलाना ने कहा कि भारत के मुसलमानों को केवल संघीय शासन प्रणाली (Federal Forum of Govt.) स्वीकार होगा तथा एकात्म शासन प्रणाली (Unitary Forum of Govt.) किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं होगी।

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी ने रचाया भारत विभाजन का आधार

दिसम्बर १९३० के मुस्लिम लीग के इलाहाबाद अधिवेशन से भी एक वर्ष पहले ३ दिसम्बर १९२९ को अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर रहे सर रोज मसूद ने संयुक्त प्रान्त (U.P.) के गवर्नर को एक पत्र लिखा – "हिन्दुओं व मुसलमानों में विचार भिन्नता बहुत गहरी है और मुस्लिमों को भारी आशंका है कि स्वतंत्र भारत में उन्हें किनारे कर दिया जाएगा। अतः मुसलमानों में यह बात जोर पकड़ती जा रही है कि अफगानिस्तान और ईरान (परसिया) के साथ मिलकर भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों का मुस्लिम प्रभाव वाला गठजोड़ बनाया जाए जिसमें पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान और अफगानिस्तान सम्मिलित किए जाएँ।"

लंदन में रह रहे रहमत अली ने भी जनवरी २८, १९३३ को एक पत्रक वितरित किया Now or Never" 'अभी या कभी नहीं', जियो या मरने के लिए तैयार हो जाओ'। रहमत अली ने भारत के विभाजन का ही नारा इस पत्रक में बुलंद किया। रहमत अली ने कहा कि भारत कभी एक देश नहीं रहा और न कभी एक राष्ट्र रहा।

सर अल्लामा इकबाल के चिंतन की पृष्ठभूमि

सबसे पहले मुस्लिम राज्य की माँग उठाने वाले सर अल्लामा इकबाल का जन्म १८७७ ई. में स्यालकोट में हुआ था। इकबाल के दादा कश्मीरी ब्राह्मण थे और श्रीनगर घाटी से स्यालकोट स्थानांतरित हुए थे। इकबाल ने अपने कुछ विचार इस कविता में प्रस्तुत किए हैं–

I am a rose from the paradise of Kashmir. Look at me, for in India you will never find again.

A son of Brahmin familiar with the mystical knowledge of Mulana Rumi and Shams-i-Tabrej.

My ancestors were all worshippers of idols like olt of Manat."

ये वही इकबाल हैं जिन्होंने कभी लिखा था–

"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुले हैं इसकी ये गुलिस्ताँ हमारा।।

Religion does not teach animosity towards each other, We are all Indians, India is our country."

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम वतन हैं, हिन्दोस्ताँ हमारा।।

१८७७ में स्यालकोट में जन्मे यही इकबाल जब २८ वर्ष (१९०५) की आयु में यूरोप गए तब वहाँ जाकर उनके सभी विचार परिवर्तित हो गए। जहाँ जाकर वे इस्लाम के झण्डाबरदार बन गए। युवावस्था में हिन्दू मुस्लिम एकता व भारत की देशभक्ति की बात करने वाला व राष्ट्रभक्ति की प्रेरणादायक कविताएँ लिखने वाला इकबाल आगे चलकर मुस्लिम लीग के १९३० के अधिवेशन में सर सैयद अहमद खाँ के विचारों में पूरी तरह ढल गया। इन्हीं इकबाल ने भाषण में कहा कि– The Muslim demand for the creation of Muslim India within India is therefore perfectly justified. भारत में मुस्लिम भारत की माँग मुसलमानों द्वारा उठाया जाना पूर्णतया उचित है।" ब्रिटिश शासन के अंतर्गत मुस्लिमों द्वारा शासित एक पृथक राज्य मेरी राय में मुसलमानों के भविष्य के लिए आवश्यक है जिसमें NWFP (North West Frontier Province) पंजाब, उ.प्र. सीमावर्ती प्रदेश सिंध और बलूचिस्तान को मिलाकर स्वायत्तशासी प्रदेश बनाया जाए। हम भारत में ७ करोड़ मुसलमान हैं और भारत की किसी भी अन्य जाति से हम अधिक संगठित हैं। वास्तव में भारत में केवल मुसलमान ही वह शक्ति हैं जो एक राष्ट्र कहलाने के अधिकारी हैं।' अतः संपूर्ण विनाश से बचना है तो सभी मुसलमानों को अपने मतभेद भुलाकर एक मंच पर एक राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत हो जाना चाहिए। इन्हीं इकबाल ने जिन्ना को लंदन से भारत लाने का आग्रह किया। जिन्ना लंदन में बसने का निर्णय ले चुके थे परन्तु २८ मई १९३७ को इकबाल शेष पृष्ठ 11 पर

शिव मम जीवन शिव कर दे।।

शिव मम जीवन शिव कर दे।।
नूतन वर्ष हर्ष से पूरित मंगलमय कर दे।
जग के हर मानव के उर में वेद ज्ञान भर दे।।
मिटे अंधेरा होय सवेरा निर्मल मन कर दे।
घोर तमिसा आर्य राष्ट्र की छिन्न–भिन्न कर दे।।
भारत को भा–रत कर दे तू मोह निशा हर ले।
नवप्रभात से जीवन कलिका तू विकसित कर दे।।
नव उल्लास विश्व में व्यापे, तन मन सब पुलकित कर दे।
"क्लैव्यभाव दुःख दैन्य मिटाकर शौर्य ओज भर दे।।
भय विहवल हर मानव उर में निर्भयता भर दे।
संस्कृति का संत्रास मिटाकर लोक पूर्ण आलोकित कर दे।।
जीवन में नव ज्योति जगाकर अंधकार हर ले।
वेदमंत्र की पावन ध्वनि से शोक मुक्त कर दे।।
विकृति से हम मुक्त सदा हों संस्कृति से संयुक्त सदा हो।
ऐसा दिव्य भाव प्रलयंकर तन मन में भर दे।।
गरल पान का मानवता का सुधा सिक्त वसुधा कर दे।
शांति, सरलता, शुचिता, मुदिता जन–जन में भर दे।।
शतपथ का सन्मार्ग दिखाकर सकल विघ्न हर ले।
संस्कृति का उत्थान करें हम तू ऐसा वर दे।।

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

अवधपुरी यह चरित प्रकाशा श्री मानसारंभ

साभार विनय पत्रिका

(पिछले अंक का शेष)

टोडरमल शून्य में ताँकते हुए बोले, ''क्या विस्तार से और क्या निस्तार से, इनके कारनामे क्या, प्रकारान्तर से अपनी जंघा उघाड़कर जान लाज मरना ही है। धूर्तों के कारनामे मूर्खों के कारण ही करिश्माई होते हैं अन्यथा तो वे छठी से पूर्व ही तेरही करा लेते हैं। और क्या कहें?''

टोडरमल के चुप होते देखकर गंग फिर बोल उठे, ''टोडर राजा, अब तुम दार्शनित बनकर पहेलियाँ तो बुझाओ मत, शब्दाडंबर में उलझाकर विषयान्तर होने का प्रयत्न भी मत करो। सीधे–सीधे बोलो।''

''कविवर, सीधे की बात तो यह है कि एक सूफी शेखसादी जो निरंतर दस वर्ष सोमनाथ में साधु बन कर रहा और सोमनाथ विध्वंस का प्रधान कारण बना। दूसरा सूफी मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी जिसने सम्राट् पृथ्वीराज चौहान की माता को बहकाया। महाराज सोमेश्वर द्वारा निर्मित एक विशाल मंदिर का ध्वंस कराकर ढाई दिन का झोंपड़ खड़ा कराया। तीसरा सूफी दिल्ली का ख्वाजा कुतुबुद्दीन काकी, जिसने पृथ्वीराज और जयचंद की चिंगारियों के शोले बनाए। अगला इसी काकी का प्रधान शिष्य फरीदुद्दीन जो बाबा फरीद बनकर अयोध्या में जमा और बदायूँ में जन्मे निजामुद्दीन को हजरत बनाया। अपनी कठपुतली बनने से इंकार करने वाले सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक का वैरी बनकर दिल्ली भेजा, यह कहकर कि 'गयासुद्दीन की हत्या हुए बिना तेरी गुरु–दक्षिणा का भार तेरे शिर पर रहेगा'। निजामुद्दीन ने गुरुदक्षिणा ब्याज सहित चुकाई। गयासुद्दीन के आधे पागल भतीजे मुहम्मद बिन तुगलक को अपने चमत्कारों के बल पर बादशाहत दिलाने का लालच देकर, गाँठ लिया। गयासुद्दीन के बंगाल से संदेश आते रहे 'पाखंडी, दिल्ली आते ही तुझे समझ लूँगा' और ये महाशय प्रत्युत्तर में एक ही वाक्य दुहराते रहे–'हनोज दिल्ली दूर अस्त' अर्थात् दिल्ली अभी दूर है। मार्ग में कहीं मुहम्मद बिन तुगलक के द्वारा उसके स्वागत में एक विशाल द्वार खड़ा कराया गया। उसका हाथी ज्यों ही द्वार के नीचे से होकर जाने लगा कि वह द्वार भड़भड़ाकर गिर पड़ा। जब तक चाचा मलवे से निकले तब तक तो भतीजे का खंजर उसके धड़ से सिर जुदा कर चुका था। बैठ गई निजामुद्दीन औलिया की धाक, घड़ने लगा अमीर खुसरो उसकी प्रशस्ति में कसीदे और प्रसिद्ध हो गया चंदवरदाई की कीर्ति पर पदाघात करके हिन्दवी का आदिकवि वाल्मीकि। लिख गया–

गोरी सोवै सेज पै, मुख पै डारे केस।
चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देस।।

–सीधे सादे शब्दों के अर्थ का अनर्थ करने लगे रहस्यवादी। और क्या कहें?''

''अरे, फिर चुप।''

''आगे की गंग महाराज, आप कहो।''

''तो सुनो, फिर आया एक सूफी शाह कलन्दर जिसकी मजार पानीपत में है। उसने बाबर को उकसा कर श्रीरामजन्मभूमि का महाराज विक्रमादित्य द्वारा निर्मित भव्य मंदिर तोपों से उड़वाया। संभल के भगवान् श्री कल्कि नारायण के मंदिर को हरिमंदिर मस्जिद में परिणित कराया। उस शाह कलंदर के मजार पर ध्वस्त जन्मभूमि मंदिर के अभी भी चार स्तंभ लगे हुए हैं जो उसकी विद्वेषमूलक कीर्ति में चार चाँद लगा रहे हैं।''

''इसके पश्चत् आया शेख सलीम चिश्ती जिसके नाम और काम पर शहंशाह के बड़े शहजादे का नाम सलीम है और उसके जग प्रसिद्ध पिता मियाँ अकबरशाह उसे नाक–भों सिकोड़कर 'शेखू' कहकर पुकारते हैं और यथासंभव अपनी आँखों से दूर रखते हैं। यह भी रहस्यवाद है, यही समझिए। इसका अर्थ मुझसे अधिक राजा वीरबल जानते हैं जो दरबारी नव–रत्नों में एक रत्न है। माणिक–मोती होते हुए भी गोमेद और लहसुनिए हुए बैठे हैं।''

''इन शेखसलीम चिश्ती के पश्चात् एक और सूफी हैं जो ग्वालियर में रहते हैं। उनकी अम्मी कभी के सुल्तान–ए–हिन्द सिकन्दर लोदी की बेटी हैं। उन्हीं गौस साहब के शागिर्द नव–रत्नों में एक मियाँ तानसेन हैं। वे भी गुरु–दक्षिणा में शिखा–सूत्र भेंट कर चुके हैं।''

वीरबल चिढ़कर बोले, ''गंग, यह भी कह दो न कि खतना भी करा चुके हैं।''

''ठीक है, इसके चश्मदीद गवाह आप होंगे तभी आपको इसका इल्म है। आप जैसे ब्रह्मभट्ट असत्य बोलेंगे, इसकी तो यह सामान्य गंग स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकता।''

अब राजा वीरबल के लिए बैठना कठिन क्या असंभव हो गया। अतः वह व्यस्तता का बहाना बनाकर खड़ा हो गया और गोस्वामी जी के प्रति समादर की औपचारिकता का प्रदर्शन करता हुआ शीघ्रता से संकटमोचन परिसर के द्वार पर खड़े हुए हाथी पर बैठकर चला गया।

गंग माधवदास के मुँह से उसके प्रस्थान का समाचार सुनकर ठठा पड़े। होल द्वारा ठठाने का कारण पूछने पर वह बोले, ''कविराज होल, हमें एक ज्योतिषि महाराज बता चुके हैं कि हमें लेने देवेन्द्र, का विमान उस समय आएगा, जब इस हाथी या इसके किसी भाई–बंधु का पैर हमारी छाती की सवारी कर लेगा।''

''क्या?''

''अरे प्यारे टोडर राजा, ऐसे चौंक कर प्रश्न मत करो। जिस दिन से हमने अपनी ललाट पाटी कि बँचवा ली, उस दिन से हम निर्भय हो गए। यह शरीर तो देना है न, तो फिर गंग की छाती से गंगा निकलने दो। अरे देखना, उसकी बाढ़ में क्या–क्या बहेगा। छोड़ो आगामी कल की बात आगामी कल पर, और बीते कल की बात बीते कल पर। आज की बात करो आज और अभी।''

''कहो, कहो।''

गोस्वामी जी के कहते ही गंग बोले, ''सुनिए श्री महाराज, वह आपसे, आपके लिए, आपके द्वारा समाधान की याचिका है, अतः कह रहा हूँ। कुतुबन–मंझन आदि तो कभी के मर–खप लिए किन्तु एक जायसी मरकर भी अभी प्रेम बनकर गली–गली में और विशेषकर अवध क्षेत्र के तो चप्पे–चप्पे पर कड़े बजा–बज कर, नाचता–गाता फिर रहा है।''

(शेष अगले अंक में)

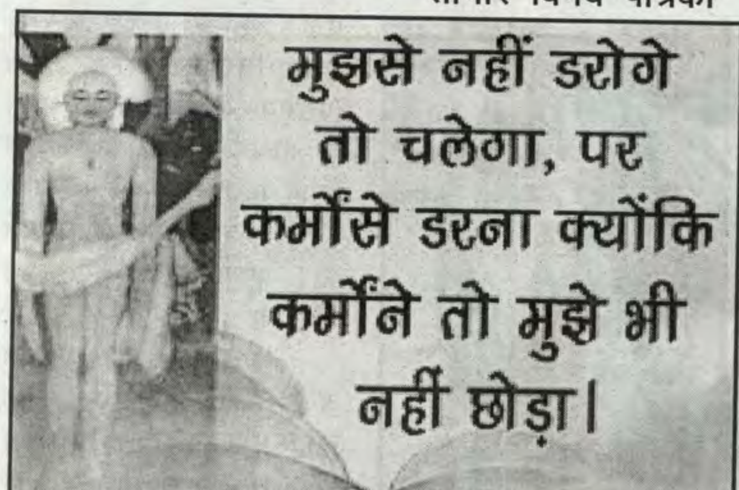

पहली बार हिन्दू महिला के सीनेटर बनने पर प्रतिक्रिया

पहली हिन्दू महिला सीनेटर श्री मती रत्ना भगवानदास चावला बनी थी। वह भी सिन्ध की थी और पी पी पी के टिकट पर ही सीनेटर बनी थी। अब पी पी पी ने दुबारा हिन्दू महिला कृष्णा कुमारी कोल्ही को सीनेटर के लिए अपना प्रत्याशी बनाया है। कोल्ही ने चुनाव जीत लिया है। उन्होंने 2013 में सिंध यूनिवर्सिटी से समाजशास्त्र से एम० ए० किया था। इस प्रकार वे पाकिस्तान की दूसरी हिन्दू महिला सीनेटर बनी हैं। हम उनकी उन्नति और प्रगति की कामना करते हैं। उनके बनने से हिन्दुओं का भय और डर दूर होगा।

सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर

सजायाफ्ता के पार्टी बनाने और पदाधिकारी बनने पर रोक के खिलाफ सरकार

आपराधिक मामले में दोषी करार सजायाफ्ता के राजनीतिक दल बनाने और पार्टी पदाधिकारी बनने पर रोक लगाने की मांग का केंद्र सरकार ने विरोध किया है। सरकार ने बुधवार को सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दाखिल कर कहा कि राजनीतिक दल में पदाधिकारी की नियुक्ति पार्टी की स्वायत्तता का मुद्दा है।

टिप्पणी

1. वैसे तो सभी दल गर्व से कहते हैं कि देश का हिन्दू विरोधी संविधान सर्वश्रेष्ठ है फिर इसमें 68 वर्षों में 125 बार संशोधन करने की नौबत क्यों आई?

2. क्या वह संधिधान उत्तम हो सकता है जिसमें सजायाफ्ताओं को भी राजनीतिक कार्य करने की खुली छूट हो। उन्हें तो वोट के अधिकार से भी वंचित कर देना चाहिए।

3. देश के शासक, भले–शिक्षित–सदाचारी होंगे? या गुण्डे, अपराधी, शरारती और सजा याफ्ता?

4. चूंकि भाजपा में भी 20-25 प्रतिशत अपराधी लोग विभिन्न पदों पर हैं इसीलिए गांधी वादी मोदी सरकार ने सजायाफ्ताओं के राजनीतिक कार्यो का पक्ष लिया है यह शर्म की बात है। भाजपा से ऐसी आशा नहीं थी।

5. देश को स्वतन्त्र कराने वालों ने यह कभी भी नहीं सोचा होगा कि स्वतन्त्र भारत का शासन चलाने वालों में अपराधी भी शामिल रहेंगे।

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

वेदों में नारी

✍ डॉ० विवेक आर्य

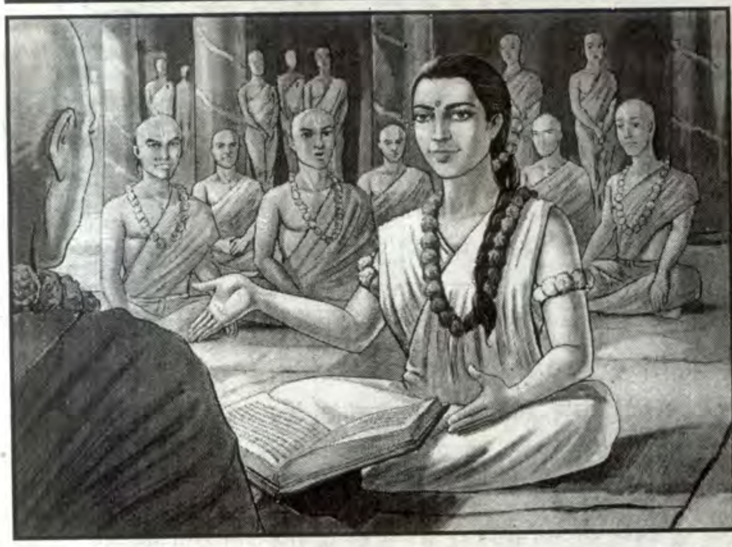

(पिछले अंक का शेष)

५. शंका- क्या नारी जाति को वेदाध्ययन करने का अधिकार नहीं हैं?

समाधान- कुछ अज्ञानी लोगों ने यह प्रचलित कर दिया हैं की नारी और शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं हैं परन्तु आज तक ऐसा मानने वाले वेद मंत्रों में एक भी मंत्र इस कथन के समर्थन में नहीं दिखा पाये हैं। इसके विपरीत वेदों में नारी को वेदाध्ययन करने का स्पष्ट सन्देश हैं।

ऋग्वेद में ईश्वर सन्देश देते हुए कह रहे हैं की हे समस्त नर नारियों! तुम्हारे लिए ये मंत्र समान रूप से दिए गए हैं तथा तुम्हारा परस्पर विचार भी समान रूप से हो। मैं तुम्हें समान रूप से ग्रंथों का उपदेश करता हूँ।

अथर्ववेद में स्पष्ट सन्देश हैं की ब्रह्मचर्य का पालन कर कन्या वर का ग्रहण करे। यहाँ पर, ब्रह्मचर्य का अर्थ हैं ब्रह्म अर्थात वेद में चर अर्थात गमन, ज्ञान या प्राप्ति करना।

अथर्ववेद में नववधू को सम्बोधित करते हुए उपदेश दिया गया हैं की वधु! तेरे आगे, पीछे, मध्य में, अंत में सर्वत्र वेद विषयक ज्ञान रहे। और वेदज्ञान को प्राप्त करके तदनुसार तुम अपना सारा जीवन बना।

इसी प्रकार से यजुर्वेद, में स्त्री को उपदेश हैं की **इमा ब्रह्मा पीपिही** अर्थात सौभाग्य की प्राप्ति के लिए वेदमंत्रों के अमृत का बार बार अच्छी प्रकार से पान कर।

ऋग्वेद में स्वामी दयानंद लिखते हैं जो कन्या २४ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य पूर्वक अंग–उपांग सहित वेद विद्याओं को पढ़ती हैं, वे मनुष्य जाति को सुशोभित करने वाली होती हैं।

यजुर्वेद के भाष्य में स्वामी दयानंद लिखंते हैं यदि मनुष्य इस सृष्टि में ब्रह्मचर्य आदि से कुमार और कुमारियों को द्विज बनाएं तो वे शीघ्र विद्वान हो जाएं।

ऋग्वेद के भाष्य में स्वामी दयानंद लिखते हैं जिस प्रकार वैश्य लोग धर्म धारण करके धनोपार्जन करते हैं, उसी प्रकार कन्याओं को चाहिए की विवाह से पहले शुभ ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके विदुषी अध्यापिकाओं को प्राप्त करके सुशिक्षा और (वेद) विद्या संचय करके विवाह करें।

ऋग्वेद के भाष्य में स्वामी दयानंद लिखते हैं जैसे ब्रह्मचर्य करके यौवनावस्था को प्राप्त हुई विदुषी कुमारी कन्या अपने पति को पा निरंतर उसकी सेवा करती हैं और जैसे ब्रह्मचर्य को किये हुए जवान पुरुष अपनी प्रीति के अनुकूल चाही हुई स्त्री को पाकर आनंदित होता हैं, वैसा ही सभा और सेनापति सदा होवें। ऐसा ही आशय ऋग्वेद ५/३२/११ में मिलता हैं।

महाभारत में स्पष्ट रूप से लिखा हैं की जिनका धन समान हो और वेदशास्त्र विषयक ज्ञान समान हो, उनमें मित्रता और विवाह आदि हो सकते हैं, बलवान और सर्वथा निर्बल व्यक्तियों में नहीं। वेदों में स्त्री को विदुषी बनने का और अपने गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार गुणशाली वर चुनने का अधिकार दिया गया हैं। इस प्रकार से वेदों में अनेक मंत्र स्त्रियों को वेदाध्ययन की प्रेरणा देते हैं।

वेदों में अनेक सूक्त हैं जैसे ऋग्वेद १०/१३४, १०/४०, ८/९१, १०/९५, १०/१०७, १०/१०६, १०/१५४, १०/१५९, ५/२८ आदि जिनकी ऋषिकाएँ गोधा, घोषा, विश्ववारा, अपाला, उपनिषत, निषत, रोमशा आदि हुई हैं। यह ऋषिकाएँ न केवल वेदों को पढ़ती थी, उनके रहस्य को समझती थी अपितु उनका प्रचार भी करती थी। इन ऋषिकाओं की सूचि बृहद देवता अध्याय में मिलती हैं। ऋषिकायों को ब्रह्मवादिनी भी कहा जाता था और इनका नियमपूर्वक उपनयन, वेदाध्ययन, वेदाध्यापन, गायत्री मंत्र का उपदेश प्रदान आदि होता था।

६. शंका- क्या नारी जाति को यज्ञ में भाग लेने का अधिकार नहीं हैं?

समाधान- वैदिक काल में नारी जाति को यज्ञ में भाग लेने का पूर्ण अधिकार था जिसे मध्य काल में वर्जित कर दिया गया था। कुछ ग्रंथों में इस बात को प्रचलित कर दिया गया की नारी का स्थान यज्ञवेदी से बाहर है अथवा कन्या और युवती अग्निहोत्र की होता नहीं बन सकती। वेद परम प्रमाण हैं इसलिए इस शंका का समाधान भी वेद भली प्रकार से करते हैं। वेद नारी जाति को यज्ञ में भाग लेने का पूर्ण अधिकार देते हैं।

ऋग्वेद में कहा गया हैं की जो पति–पत्नी समान मनवाले होकर यज्ञ करते हैं उन्हें अन्न, पुष्प, हिरण्य आदि की कमी नहीं रहती हैं।

ऋग्वेद में कहा गया हैं की विवाह यज्ञ में वर वधु उच्चारण करते हुए एक दुसरे का ह्दय–स्पर्श करते हैं।

ऋग्वेद में कहा गया हैं की विद्वान लोग पत्नी सहित यज्ञ में बैठते हैं और नमस्करणीय (नमन करने योग्य जैसे ईश्वर, विद्वान आदि) को नमस्कार करते हैं। इस प्रकार यजुर्वेद और अथर्ववेद में भी यज्ञ में नारी के भाग लेने के स्पष्ट प्रमाण हैं।

७. शंका - क्या नारी को यज्ञ में ब्रह्मा बनने का अधिकार हैं?

समाधान- यज्ञ में ब्रह्मा का पद सबसे ऊँचा होता है। ऐतरेय ब्राह्मण ५/३३ के अनुसार ज्ञान, कर्म और उपासना तीनों विद्याओं के प्रतिपादक वेदों के पूर्ण ज्ञान से ही मनुष्य ब्रह्मा बन सकता हैं। शतपथ ब्राह्मण ११४५४७ में इसी तथ्य का समर्थन किया गया हैं। गोपथ ब्राह्मण १६३ के अनुसार जो सबसे अधिक परमेश्वर और वेदों का ज्ञाता हो उसे ब्रह्मा बनाना चाहिए।

ऋग्वेद ८/३३ में नारी को कहा गया है कि स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ अर्थात इस प्रकार से उचित सभ्यता के नियमों का पालन करती हुई नारी निश्चित रूप से ब्रह्मा के पद को पाने योग्य बन सकती है।

जब वेदों में स्पष्ट रूप से नारी जाति को यज्ञ में ब्रह्मा बनने का आदेश हैं तो अन्य ग्रंथों से इसके विरोध में अगर कोई प्रमाण प्रस्तुत किया जाता है तो वह अमान्य है

क्यूंकि मनुस्मृति २/१३में लिखा है कि धर्म को जानने की इच्छा रखने वालों के लिए वेद ही परम प्रमाण है।

८. शंका- क्या वेदों में दहेज देने की प्रथा का विधान हैं जिसके कारण नारी जाति पर अनेक अत्याचार हो रहे है?

समाधान- वेदों में पुत्री को दहेज से अलंकृत करने का सन्देश दिया गया है परन्तु यहाँ पर दहेज का वास्तिक अर्थ उससे भिन्न है जैसा प्रायः प्रचलित है। अथर्ववेद १४/१/८ के मंत्र में पिता द्वारा कन्या को स्तुति वृति वाला बना देना ही पुत्री के लिए सच्चा दहेज है। यहाँ पर स्तुति वृति का भाव है पुत्री सदा दूसरों के गुणों की प्रशंसा करने वाली हो, किसी के भी अवगुणों की और ध्यान नहीं देने वाली हो अर्थात परनिंदा नहीं करने वाली हो एवं उसके गहने उसकी भद्रता, उसका शिष्टाचार और उसकी प्रभु के गुणगान करने की वृति हो।

यहाँ पर पुत्री को गुणों से सुशोभित करना एक पिता के लिए सच्चा दहेज देने के समान हैं। कालांतर में कुछ लोभी लोगो ने दहेज का अर्थ धन समझ लिया जिसके कारण उनका लालच बढ़ता गया एवं उसका परिणाम नारी जाति पर अत्याचार के रूप में आया हैं जो निश्चित रूप से सभ्य समाज के माथे पर कलंक के समान हैं।

६. शंका- क्या वेदों में केवल पुत्र की कामना करी गई हैं?

समाधान- आज समाज में कन्या भ्रूण हत्या का महापाप प्रचलित हो गया है। जिसका मुख्य कारण नारी जाति का समाज में उचित सम्मान न होना, धन आदि के रूप में दहेज जैसी कुरीतियों का होना, समाज में बलात्कार जैसी घटनाओं का बढ़ना, चरित्र दोष आदि हैं जिससे नारी जाति की रक्षा कर पाना कठिन हो गया हैं। ऐसे में समाज में पुत्र की कामना अधिक बलवती हो उठी हैं एवं पुत्री को बोझ समझा जाने लगा हैं। कुछ लोगो ने यह कुतर्क देना प्रारम्भ कर दिया है कि वेद नारी को हीन दृष्टी से देखते है और वेदों में सर्वत्र पुत्र ही मांगे गई है। सत्य यह है कि वेदों में पत्नी को उषा के सामान प्रकाशवती ऋग्वेद ४/१४/३, ऋग्वेद ७/७८/३, ऋग्वेद १/१२४/३, ऋग्वेद १/४८/८, वीरांगना अथर्ववेद १४/१/४७, यजुर्वेद ५/१०, यजुर्वेद १०/२६, यजुर्वेद १३/१६, यजुर्वेद १३/१८, वीरप्रसवा ऋग्वेद १०/४७/२–५, ऋग्वेद ४/२/५, ऋग्वेद ७/५६/२४, ऋग्वेद ६/६८/१, विद्या अलंकृता यजुर्वेद २०/८४, यजुर्वेद २०/८५, ऋग्वेद १/१६४/४६, ऋग्वेद ६/४६/७, स्नेहमयी माँ ऋग्वेद १०/१७/१०, ऋग्वेद ६/६१/७, यजुर्वेद ६/१७, यजुर्वेद ६/३१, अथर्ववेद ३/१३/७, पतिंवरा (पति का वरण करने वाली) ऋग्वेद ५/३२/११, यजुर्वेद ३७/१०, यजुर्वेद ३७/१६, यजुर्वेद ८/७, अथर्ववेद २/३६/५, अन्नपूर्णा अथर्ववेद ७/६०/५, अथर्ववेद ३/२८/४, अथर्ववेद ३/१२/२, यजुर्वेद ८/४२, ऋग्वेद १/६२/८, सदगृहणी और सम्राज्ञी अथर्ववेद १४/१/१७, अथर्ववेद १४/१/४२, यजुर्वेद ११/६३, यजुर्वेद ११/६४, यजुर्वेद १५/६३, आदि से संबोधित किया गया हैं जो निश्चित रूप से नारी जाति को उचित सम्मान प्रदान करते हैं। उदहारण के लिए वेदों में नारी जाति की यशगाथा के लिए कुछ वेद मंत्र प्रस्तुत कर रहे हैं।

१. मेरे पुत्र शत्रु हन्ता हों और पुत्री भी तेजस्वनी हो। **ऋग्वेद १०/१५६/३**

२. यज्ञ करने वाले पति–पत्नी और कुमारियों वाले होते है। **ऋग्वेद ८/३१/८**

३. प्रति प्रहर हमारी रक्षा करने वाला पूषा परमेश्वर हमें कन्यायों का भागी बनायें अर्थात कन्या प्रदान करे। **ऋग्वेद ६/६७/१०**

४. हमारे राष्ट्र में विजयशील सभ्य वीर युवक पैदा हो, वहां साथ ही बुद्धिमती नारियों के उत्पन्न होने की भी प्रार्थना हैं। **यजुर्वेद २२/२२**

५. जैसा यश कन्या में होता हैं वैसा यश मुझे प्राप्त हो। **अथर्ववेद १०/३/२०**

इस प्रकार से नारी जाति की वेदों में महिमामंडन हैं नाकि उन्हें अवांछनीय मान कर केवल पुत्रों की कामना की गई हैं।

१०. शंका- क्या वेदों में बहु–विवाह आदि का विधान हैं?

समाधान- वेदों के विषय में एक भ्रम यह भी फैलाया गया हैं की वेदों में बहुविवाह की अनुमति दी गयी है। वेदों में स्पष्ट रूप से एक ही पत्नी होने का विधान बताया गया हैं।

ऋग्वेद १०/८५ को विवाह सूक्त के नाम से जाना चाहता हैं। इस सूक्त के मंत्र में कहा गया हैं तुम दोनों इस संसार व गृहस्थ आश्रम में सुख पूर्वक निवास करो। तुम्हारा कभी परस्पर वियोग न हो और सदा प्रसन्नता पूर्वक अपने घर में रहो। यहाँ पर हर मंत्र में तुम दोनों अर्थात पति और पत्नी आया हैं। अगर बहुपत्नी का सन्देश वेदों में होता तो तुम सब आता।

ऋग्वेद १०/८५/४७ में हम दोनों (वर–वधु) सब विद्वानों के सम्मुख घोषणा करते हैं की हम दोनों के ह्दय जल के समान शांत और परस्पर मिले हुए रहेंगे।

अथर्ववेद ७/३५/४ में पति पत्नी के मुख से कहलाया गया हैं की तुम मुझे अपने ह्दय में बैठा लो, हम दोनों का मन एक ही हो जाये।

अथर्ववेद ७/३८/४ पत्नी कहती हैं तुम केवल मेरे बनकर रहो और अन्य स्त्रियों का कभी कीर्तन व व्यर्थ प्रशंसा आदि भी न करो।

ऋग्वेद १०/१०१/११ में बहु विवाह की निंदा करते हुए वेद कहते हैं जिस प्रकार रथ का घोड़ा दोनों धुराओं के मध्य में दबा हुआ चलता हैं वैसे ही एक समय में दो स्त्रियाँ करने वाला पति दबा हुआ होता हैं अर्थात परतंत्र हो जाता हैं इसलिए एक समय दो व अधिक पत्नियाँ करना उचित नहीं हैं।

इस प्रकार वेदों में बहुविवाह के विरुद्ध शेष पृष्ठ 10 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

शेष पृष्ठ 6 का
सड़क नाम परिवर्तन औरंगजेब.......

स्थान उसकी सक्रिय कर्मभूमि रहा है तो उस स्थान की पहचान उसके नाम पर हो, यह सर्वथा उचित हो सकता है। उक्त से इतर यदि किसी स्थल का नामकरण किसी व्यक्ति की स्मृति को अक्षुण्ण रखने हेतु किया जाये तो वह एक अलग बात है। जब किसी व्यक्ति की स्मृति को अक्षुण्ण और सजीव बनाने हेतु किसी स्थल का नामकरण किया जाता है तो प्रायः धारणा यह रहती है कि वह व्यक्ति एक आदर्श व्यक्ति हो, जिससे वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियाँ शिक्षा और प्रेरणा ले सकें। यही नहीं वे उस महान व्यक्तित्व से अपने जुड़ाव पर गौरव अनुभव करके सिर ऊँचा उठा सकें। स्वर्गीय प्रोफेसर ए.पी.जे. कलाम इन सभी दृष्टियों से एक ऐसे ही व्यक्तित्व थे; जिनसे भावी पीढ़ियाँ संस्कार, शिक्षा, प्रेरणा और गौरव हासिल करती रहेंगी। कलाम साहब धर्मनिरपेक्षता की तो एक सर्वाधिक दैदीप्यमान मशाल और मिसाल थे, जिससे राष्ट्र सदैव ही धर्मनिरपेक्षता की प्रेरणा लेता रहेगा। अतः किसी भी सत्यनिष्ठ व्यक्ति को तो इस बात पर बेहद खुश होना चाहिए कि औरंगजेब रोड का नाम बदलकर ए.पी.जे. कलाम रोड कर दिया गया।

किन्तु क्या कलाम के विपरीत औरंगजेब को धर्मनिरपेक्षता या इस मुद्दे को छोड़ भी दें, तो क्या कोई ऐसे आदर्शों के प्रतीक के रूप में माना जा सकता है जिससे वर्तमान या भविष्य की पीढ़ी कोई प्रेरणा प्राप्त कर सके? क्या औरंगजेब का व्यक्तित्व किन्हीं उच्च आदर्शों और सिद्धान्तों का उदाहरण हो सकता है जिससे वर्तमान या भावी पीढ़ी गर्वोन्मुक्त हो सके? क्या औरंगजेब का शासनकाल किन्हीं उच्च आदर्शों, सुशासन या न्यायप्रियता का शासनकाल रहा है जो वर्तमान या भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत हो सके? दुर्भाग्य से हम इन प्रश्नों की जितनी अधिक गहराई में जाएँगे, हमें उतनी ही अधिक निराशा होगी और हमें उनके उत्तर उतने ही नकारात्मक हासिल होंगे। सत्य तो यह है कि औरंगजेब के शासनकाल और उसकी शासननीति की जितनी बखियाँ उधेड़ी जाएँ, तो उसमें सिर्फ कुशासन की दुर्गन्ध, धर्मान्धता का अंधेरा तथा अन्याय, अत्याचार और निर्दयता के काले अध्याय ही खुलते जाएँगे। औरंगजेब के शासनकाल के इतिहास को कुछ तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादियों ने काफी महिमा मंडित करने का प्रयास किया है, किन्तु वे उसके रक्तरंजित इतिहास, धर्मोन्मादी स्वरूप, निर्दयी, सदा षडयंत्रकारी और धोखाधड़ी वाले स्वरूप पर किसी तरह पर्दा नहीं डाल सके हैं। आज जनमानस में (चाहे वे किसी भी सम्प्रदाय के क्यों न हों) औरंगजेब के शासनकाल की छवि एक काले अध्याय के रूप में ही पहचानी जाती है।

(शेष अगले अंक में)

शेष पृष्ठ 9 का
वेदों में नारी........

स्पष्ट उपदेश हैं। वेदों की अलंकारिक भाषा को समझने में गलती करने से इस प्रकार की भ्रान्ति होती हैं।

११. शंका- क्या वेद बाल विवाह का समर्थन करते हैं?

समाधान- हमारे देश पर विशेषकर मुस्लिम आक्रमण के पश्चात बाल विवाह की कुरीति को समाज ने अपना लिया जिससे न केवल ब्रहमचर्य आश्रम लुप्त हो गया बल्कि शरीर की सही ढंग से विकास न होने के कारण एवं छोटी उम्र में माता पिता बन जाने से संतान भी कमजोर पैदा होती गयी जिससे हिन्दू समाज दुर्बल से दुर्बल होता गया।

अथर्ववेद के ब्रहमचर्य सूक्त के ११/५/१८ मंत्र में कहा गया हैं की ब्रहमचर्य (सादगी, संयम और तपस्या) का जीवन बिता कर कन्या युवा पति को प्राप्त करती हैं। इस मंत्र में नारी को युवा पति से ही विवाह करने का प्रावधान बताया गया हैं जिससे बाल विवाह करने की मनाही स्पष्ट सिद्ध होती हैं।

ऋग्वेद १०/१८३ सूक्त में वर वधु मिलकर संतान उत्पन्न करने की बात कह रहे हैं। वधु वर से मिलकर कह रही हैं की तो पुत्र काम हैं अर्थात तू पुत्र चाहता हैं वर वधु से कहता हैं की तू पुत्र कामा हैं अर्थात तू पुत्र चाहती हैं अतः हम दोनों मिलकर उत्तम संतान उत्पन्न करे। पुत्र अर्थात संतान उत्पन्न करने की कामना युवा पुरुष और युवती नारी में ही उत्पन्न हो सकती हैं। छोटे छोटे बालक और बालिकाओं में नहीं हो सकती हैं।

इसी प्रकार से अथर्ववेद २/३०/५ में भी परस्पर युवक और युवती एक दुसरे को प्राप्त करके कह रहे हैं की मैं पतिकामा अर्थात पति की कामना वाली और यह तू जनीकाम अर्थात पत्नी की कामना वाला दोनों मिल गए हैं। युवा अवस्था में ही पति–पत्नी की कामना की इच्छा हो सकती हैं छोटे छोटे बालक और बालिकाओं में यह इच्छा नहीं होती हैं। इन प्रमाणों से यही सिद्ध होता हैं की वेद बालविवाह का समर्थन नहीं करते।

१२. शंका- वेदों में नारी की महिमा का संक्षेप में वर्णन बताये?

समाधान- संसार की किसी भी धर्म पुस्तक में नारी जाति की महिमा का इतना सुंदर गुण गान नहीं मिलता जितना वेदों में मिलता हैं। कुछ उदहारण देकर हम अपने कथन को सिद्ध करेगे।

१. उषा के समान प्रकाशवती - हे राष्ट्र की पूजा योग्य नारी! तुम परिवार और राष्ट्र में सत्यम, शिवम, सुंदरम की अरुण कान्तियों को छिटकती हुई आओ, अपने विस्मयकारी सद्गुणगणों के द्वारा अविद्या ग्रस्त जनों को प्रबोध प्रदान करो। जन–जन को सुख देने के लिए अपने जगमग करते हुए रथ पर बैठ कर आओ। **ऋग्वेद ४/१४/३**

२. वीरांगना- हे नारी! तू स्वयं को पहचान। तू शेरनी हैं, तू शत्रु रूप मृगों का मर्दन करने वाली हैं, देवजनों के हितार्थ अपने अन्दर सार्मथ्य उत्पन्न कर। हे नारी ! तू अविद्या आदि दोषों पर शेरनी की तरह टूटने वाली हैं, तू दिव्य गुणों के प्रचारार्थ स्वयं को शुद्ध कर! हे नारी ! तू दुष्कर्म एवं दुर्व्यसनों को शेरनी के समान विश्वंस्त करने वाली हैं, धार्मिक जनों के हितार्थ स्वयं को दिव्य गुणों से अलंकृत कर। **यजुर्वेद ५/१०**

३. वीर प्रसवा- राष्ट्र को नारी कैसी संतान दे– हमारे राष्ट्र को ऐसी अदभुत एवं वर्षक संतान प्राप्त हो, जो उत्कृष्ट कोटि के हथियारों को चलाने में कुशल हो, उत्तम प्रकार से अपनी तथा दूसरों की रक्षा करने में प्रवीण हो, सम्यक नेतृत्व करने वाली हो, धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष रूप चार पुरुषार्थ– समुद्रों का अवगाहन करने वाली हो, विविध संपदाओं की धारक हो, अतिशय क्रियाशील हो, प्रशंशनीय हो, बहुतों से वरणीय हो, आपदाओं की निवारक हो। **ऋग्वेद १०/४७/३**

४. विद्या अलंकृता-विदुषी नारी अपने विद्या–बलों से हमारे जीवनों को पवित्र करती रहे। वह कर्मनिष्ठ बनकर अपने कर्मो से हमारे व्यवहारों को पवित्र करती रहे। अपने श्रेष्ठ ज्ञान एवं कर्मो के द्वारा संतानों एवं शिष्यों में सदगुणों और सत्कर्मो को बसाने वाली वह देवी गृह आश्रम–यज्ञ एवं ज्ञान–यज्ञ को सुचारू रूप से संचालित करती रहे। **यजुर्वेद २०/८४**

५. स्नेहमयी माँ- हे प्रेमरसमयी माँ! तुम हमारे लिए मंगल कारिणी बनो, तुम हमारे लिए शांति बरसाने वाली बनो, तुम हमारे लिए उत्कृष्ट सुख देने वाली बनो। हम तुम्हारी कृपा–दृष्टि से कभी वंचित न हो। **अथर्वेद ७/६८/२**

६. अन्नपूर्णा- इस गृह आश्रम में पुष्टि प्राप्त हो, इस गृह आश्रम में रस प्राप्त हो इस गिरः आश्रम में हे देवी! तू दूध–घी आदि सहस्त्रों पोषक पदार्थो का दान कर। हे यम– नियमों का पालन करने वाली गृहणी! जिन गाय आदि पशु से पोषक पदार्थ प्राप्त होते हैं उनका तू पोषण कर। **अथर्ववेद ३/२८/४**

अंत में मनुस्मृति के प्रचलित श्लोक से इस विषय को विराम देना चाहेंगे। संसार में नारी जाति को सम्मान देने के लिए इससे सुन्दर शब्द शायद हो कहीं मिलेंगे।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रफलाः क्रियाः।।

जिस कुल में नारियो कि पूजा, अर्थात सत्कार होता हैं, उस कुल में दिव्यगुण, दिव्य भोग और उत्तम संतान होते हैं और जिस कुल में स्त्रियो कि पूजा नहीं होती, वहां जानो उनकी सब क्रिया निष्फल हैं।

1. Census Report of 1901 on Female literacy rate in united provinces was 15/ 10,000 for common population while for members of Aryasamaj it was 674/ 10,000

2. पूना प्रवचन उपदेश मंजरी १२ वां प्रवचन

3. आधुनिक भारतीय विद्वानों में से स्वामी दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश में, पंडित सत्यव्रत जी सामश्रमी ने ऐतरेयालोचन में, श्री रमेशचन्द्र दत्त ने History of civilization of India में, श्री भगवत शरण उपाध्याय Women in Rigveda में, डॉ० ऐतलेकर The education in ancient India में, पंडित शिवदत्त शर्मा महामहोपाध्याय आर्य विद्या सुधाकर में, श्री काणे महोदय History of Dharam Shastras में, श्री महादेव जी शास्त्री The Vedic Law of Marriage में मानते हैं की प्राचीन काल में कन्याओं का उपनयन होता था और नारी न केवल वेदाध्ययन करती थी अपितु ऋषिकाएँ भी बनती थी।

4. M, fet Dharma and Society में लिखते हैं In Rigvedic India there were women Rishis] the wives participated in the ceremonies with their husbands- They were highly honored and respected and could even perform the function of a priest at a sacrifice.

5. Vedic Age page 390

6. वैदिक नारी रचियता रामनाथ वेदालंकार

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का **१२ आतंकवादी ढेर, तीन जवान.......**

प्रशासन लड़ाकू विमानों पर भारत के साथ करीबी सहयोग चाहता है। फेल्टर ने एक विशेष साक्षात्कार में कहा मुझे लगता है कि एफ–१६, ब्लॉक ७० या एफ–१८ के साथ लड़ाकू विमान सहयोग का रास्ता शुरू करना इस बात का बड़ा संकेत होगा कि भारत उस स्तर के सहयोग को लेकर गंभीर है। जो हमें लगता है कि भारत के हित में होगा। अगर हम इसी रास्ते पर रहे तो इससे ज्यादा करीबी सहयोग होगा और अधिक उन्नत तकनीक मिलेगी। उन्होंने कहा कि भारत की वायु सेना के लिए सशस्त्र ड्रोन में उसके हित पर भी अमेरिका विचार कर रहा है। उन्होंने कहा कि इस मामले पर उन्हें न तो कोई पेशकश मिली है और न ही इस पर कोई फैसला लिया गया है। उन्होंने कहा इसे पाना भारत के लिए स्वाभाविक होगा। हम इस अनुरोध पर विचार करेंगे लेकिन अभी तक हमारी तरफ से इसकी पेशकश नहीं की गई। हम उनके हित के बारे में जानते हैं और हम उस पर विचार कर रहे हैं लेकिन हमने अब तक कोई फैसला नहीं लिया। पिछले साल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान ट्रंप भारत को निःशस्त्र ड्रोन बेचने पर सहमत हो गए थे, ताकि हिंद महासागर में भारत की निगरानी करने की क्षमताओं को बढ़ाया जा सकें। पांचवीं पीढ़ी के एफ–३५ लड़ाकू विमानों के बारे में पूछे जाने पर अधिकारी ने कहा कि दोनों तरफ से ऐसा कोई कदम नहीं उठाया गया जैसे कि मीडिया में खबरें आ रही हैं। अधिकारी ने कहा कि हालांकि एफ–१८ समझौते पर बातचीत हो रही है। उन्होंने कहा हमारा एफ–१८ दोहरे इंजन वाला लड़ाकू विमान है जिसे भविष्य में खरीदने के लिए भारत विचार कर सकता है। अमेरिका में यह बहुत अच्छी तरह से काम करता है और इसमें अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल हुआ है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से भारतीय सेना को अत्याधुनिकतम हथियारों से सुसज्जित करने की मांग की है। उन्होंने कहा है कि हमारे देश को चीन, पाकिस्तान जैसे देशों से भयानक खतरा है इसलिये देश की रक्षा के लिए भारतीय सैनिकों का अत्याधुनिकतम हथियारों से सुसज्जित होना आवश्यक है।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये

द्विवार्षिक...300/- रुपये

आजीवन सदस्य..1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री। आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 7 का **भारत विभाजन की त्रासदी........**

ने जिन्ना को एक पत्र लिखकर पुनः भारत में आकर मुसलमानों का नेतृत्व करने व एक अलग मुस्लिम राज्य स्थापित कराने का आह्वान किया। इस पत्र के कुछ अंश इस प्रकार हैं–''मुस्लिम इंडिया की समस्याओं से आप भलीभाँति अवगत हैं। मुसलमानों की निर्धनता की समस्या भी सामने खड़ी है। शरीयत के अनुसार हमें चलना है तो मुस्लिमों के लिए पृथक राज्य की स्थापना होना नितांत आवश्यक है। यदि यह संभव नहीं हुआ तो गृहयुद्ध के अलावा कोई रास्ता नहीं बचेगा। आप भारत आकर अपनी प्रतिभा से इस लक्ष्य को सफल बनायें।''

लाहौर में १६४० का मुस्लिम लीग अधिवेशन

जिन्ना की अध्यक्षता में २३ मार्च १६४० को लाहौर में मुस्लिम लीग का अधिवेशन हुआ जिसमें प्रत्यक्ष रूप से भारत का विभाजन कर मुस्लिमों के लिए अलग देश बनाने का प्रस्ताव पारित किया गया। इस प्रकार पृथक मुस्लिम निर्वाचन क्षेत्र (१६१६) पृथक मुस्लिम स्टेट (१६३०) और पृथक मुस्लिम राष्ट्र (१६४०) का अभियान ही आगे बढ़कर १४ अगस्त १६४७ को पाकिस्तान के निर्माण का आधार बना।

सच्चर कमेटी की जड़ें इन्हीं प्रस्तावों व अभियानों में अभिसंचित की जा रही हैं। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने इसी संदर्भ में कहा था कि देश की अर्थव्यवस्था में पहला अधिकार मुसलमानों का है क्योंकि सच्चर कमेटी ने उन्हें पिछड़ा व अशिक्षित बताया है। आगे चलकर जब आर्थिक सत्ता से राजनीतिक सत्ता में परिवर्तित कर दिया जाएगा तब निश्चित ही भारत का दूसरा विभाजन करके पाकिस्तान के बाद मुगलिस्तान बनाने का अभियान चलाया जाएगा। इसलिए हिन्दुओं को भी निर्णय करना होगा – ''भारत राष्ट्र व हिन्दू राष्ट्र की रक्षा कीजिए जो अभी सम्भव है फिर कदापि नहीं – Now or Never''

अब परस्पर छिद्रान्वेषण की राजनीति से नहीं मिल सकेगा कोई समाधान। करो या मरो, अब या तो कभी नहीं, का नारा देकर जीतना होगा पाकिस्तान।।

शेष पृष्ठ 1 का **६ साल के इंतजार के बाद........**

जैकेटों को इस तरह डिजाइन किया गया है कि इन पर एकदम आधुनिक स्टील कोर बुलेट का भी असर नहीं होगा। इस लिहाज से यह जवानों की सुरक्षा के लिहाज से बेहद उपयुक्त है। २००६ में सेना की बुलेटप्रूफ जैकेट मांग को सरकार ने स्वीकार किया था लेकिन बात इसलिए आगे नहीं बढ़ सकी क्योंकि कोई भी वेंडर सेना के परीक्षण में सफल नहीं हो सका। उस वक्त चार वेंडर थे, जिनमें से केवल एक वेंडर ही सेना के पहले राउंड को पार कर सका। जिस निमार्ता ने पहले चरण को पार किया, वह दूसरे चरण में फेल हो गया। उसके बाद सेना की जरूरतों को देखते हुए सरकार ने अंतरिम आपात व्यवस्था के तहत मार्च २०१६ में ५० हजार बुलेटप्रूफ जैकेटों को खरीदने का फैसला किया था। हालांकि ये जैकेट पुराने स्टाइल की थीं और सेना की मौजूदा जरूरतों के अनुकूल नहीं थीं। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र की राजग सरकार से भारतीय सैनिको के लिये सुरक्षा सहित सभी सुविधायें शीघ्र देने की मांग की है।

शेष पृष्ठ 5 का **जब अदृश्य शक्ति ने........**

सामग्री लेकर उनके पास उपस्थित है। वह व्यक्ति कौन है, कहाँ से आया, किसने आज्ञा देकर भेजा, यह कुछ भी वे लोग समझ न सके। खाद्य वस्तुएँ उन दोनों के सामने रखकर ब्राह्मण तुरन्त चला गया। उसके बाद दोनों ने खूब तृप्त होकर भोजन किया और वहीं पर विश्राम करने लगे। सन्ध्या समय वही ब्राह्मण फिर से आया और उन्हें खाने की चीजें देकर चला गया।

बड़ी दुश्चिन्ता में, बहुत कष्ट के साथ दोनों ने ज्यों–त्यों रात बिताई। जब प्रभात हुआ, तो वृक्ष से नीचे उतर का पूर्ववत् अष्टभुजा देवी के मन्दिर में गये। दिन को वहीं पर निवास किया। उस दिन भी वही सांवले रंग का ब्राह्मण पहले दिन जैसा ठीक समय पर उपस्थित हुआ एवं भोजन देकर चला गया। दोनों ने खाया; परन्तु उस दिन जब सन्ध्याकाल बाघ की गर्जना सुनाई पड़ी, तो वे अत्यन्त भयभीत होकर विह्वल हो उठे। भोलानाथ तो अपनी माँ की गोद से कभी अलग ही नहीं हुए थे। आज इस प्रकार पराये देश में विजातीय भूमि में अपने को नितान्त निराश्रय पाकर वे अत्यन्त कातर हो गये। आँसुओं की धारा बहने लगी। वक्षस्थल प्लावित हो गया। रहर–रहकर घर की सुखस्मृति मन में जागने लगी। युवक को चित्त में निश्चय ही ऐसा लगा मानो मृत्यु आसपास घूम रही है। उसके पंजे से छूटने का कोई उपाय नहीं दीख रहा था। भय से ग्रस्त, चिन्ता से त्रस्त किसी तरह कुछ समय और बीता अपने बचावनहार की आतुर प्रतीक्षा में। पश्चिम आकाश में सुदूर नजर पहुँची, तो क्या दृश्य देख रहे हैं मानो एक ज्योतिर्मय गोलक आकाश मार्ग से उनकी ही ओर धीरे–धीरे निकट चला आ रहा है।

यह भी सच है

ये है दुनिया के सबसे खतरनाक देश

आपने अनेक देशों के बारे में सुना होगा जो अपनी खूबसूरती के लिए मशहूर हैं। लाखों पर्यटक इन देशों में हर साल घूमने जाते है जिससे इन देशों को काफी कमाई भी होती है। पर आज हम आपको ऐसे देशों के बारे में बताने जा रहे है जो विश्व में सबसे ज्यादा खतरनाक माने जाते है। यहां तक की पर्यटक भी इन देशों की यात्रा करने से डरते है। इन पांच खतरनाक देशो की लिस्ट में ये देश है।

सोमालिया अव्यवस्थित सरकार और प्रशासन इस अफ्रीकी देश की सबसे बड़ी समस्या है। सोमालिया में किडनैपिंग, चोरी और डकैती सबसे बड़ा धंधा बन चुका है। यहां समुंदर में जहाज लूटना और फिर दुनिया के देशों से फिरौती मांगना बड़ा व्यवसाय है, यहां हीरे की अवैध खाने भी हैं।

अफगानिस्तान दुनिया में कभी सबसे खतरनाक देश रहा अफगानिस्तान अब भी हर कदम पर मौत को थामे खड़ा है। यहां हर दिन–हर पल आतंकी हमलों की खबर आती रहती हैं।

यमन लंबे समय तक अस्थिरता का शिकार रहा है यमन की जनता गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार के खिलाफ सड़कों पर उतर चुकी है; विद्रोह को कुचला जा रहा है। हैती विद्रोहियों ने देश की महत्वपूर्ण जगहों पर कब्जा कर लिया है। इस देश में तो बोलने की आजादी पर भी बैन लगा हुआ है।

सीरिया मौजूदा समय में सीरिया पर पूरी दुनिया की नजर है। सीरिया में आईएसआईएस का आतक हर तरफ है, तो सरकार का विरोध कर रहे विद्रोही भी कत्लेआम मचा रहे हैं। फिलहाल सरकार ने काफी जगहों पर ईसिस के ठिकाने बर्बाद कर उन्हें भगा दिया है पर ये देश अब भी दहशत के साये में जी रहा है।

पाकिस्तान अपनी आजादी के बाद से ही लगातार पाकिस्तान अस्थिर रहा है। इसके पीछे की वजह आतंकियों और पाकिस्तानी सेना का गठजोड़ है। भारत के साथ लड़ने के बहाने पाकिस्तान आतंकियों का गढ़बन चुका है, जिसकी वजह से आतंकवाद के अलावा, राजनीतिक हिंसा, हत्या, ड्रग्स, अपहरण की अनगिनत घटनाएं आम बात हो चली हैं।

जिसे औरंगजेब तोड़ना चाहता था

उदयपुर से ३० मील उत्तर में नाथद्वारा है, वहाँ वल्लभ सम्प्रदायानुयायी वैष्णवों के मुख्य उपास्यदेवता श्रीनाथ जी का मन्दिर है। समस्त भारत के वैष्णव नाथद्वारे को अपना पवित्र तीर्थ मानकर यहाँ यात्रा करते हैं और बहुत भेंट चढ़ाते हैं। अन्य देवालयों वेफ समान यहाँ दर्शन-घण्टों तक नहीं होते, किन्तु पुष्टिमार्ग के नियामानुसार समय–समय पर ही होते हैं, जिनको 'झाँकी' कहते हैं। वल्लभ सम्प्रदाय वेफ संस्थापक श्री वल्लभाचार्य जी तेलंगजाति के सोमयाजी यज्ञनारायण भट्ट के वंशज और लक्ष्मण भट्ट के पुत्र थे। इनका जन्म वि.सं. १५३५ (ई.सं. १४७८) में चम्पारण में हुआ। इन्होंने वेदादिशास्त्रों का अध्ययन किया और कई जगह शास्त्रार्थों में विजयी होकर शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय का, जिसको वल्लभ–सम्प्रदाय भी कहते हैं, प्रचार किया। दिन–दिन इस सम्प्रदाय के अनुयायियों की संख्या बढ़ती गयी। गोवर्द्धन पर्वत पर इनको श्रीनाथ जी की मूर्ति मिली थी, ऐसी प्रसिद्धि है। वल्लभाचार्य के द्वितीय पुत्र विठ्ठलनाथजी को गुसाई (गोस्वामी) की पदवी मिली, तभी से उनकी सन्तान गुसाईं कहलायी। विठ्ठलनाथजी वेफ सात पुत्र हुए, जिनके पूजन की मूर्तियाँ अलग–अलग थीं। वे वैष्णवों में 'साथ स्वरूप' नाम से प्रसिद्ध हैं। उनके ज्येष्ठ पुत्र गिरिधरजी टीकायत (तिलकायत) थे, इसी से उनके वंशज नाथद्वारे के गुसाईं जी टीकायत महाराज कहलाते हैं और श्रीनाथजी की मूर्ति गिरिधरजी के पूजन में रही। जब औरंगजेब ने हिन्दुओं की मूर्तियाँ तोड़ने की आज्ञा दी, उस समय इस मूर्ति के तोड़े जाने के भय से उक्त गिरिधरजी महाराज के पुत्र दामोदर जी (बड़े दाऊजी) श्रीनाथजी की प्रतिमा को लेकर वि.सं. १७२६ ई.सं. १६६६) में गुप्त रीति से गोवर्द्धन से निकल गये और आगरा, बूँदी, कोटा, पुष्कर और कृष्णगढ़ में ठहरते हुए चांपासणी गाँव में, जो जोधपुर से तीन कोस दूर है, पहुँचे। परन्तु जोधपुर के महाराजा जसवन्त सिंह के अधिकारियों की दृढ़ता न देखकर गोस्वामीजी के काका गोपीनाथजी के विषय में अपनी इच्छा प्रकट की। महाराणा ने उत्तर दिया–"आप प्रसन्नतापूर्वक मेवाड़ में श्रीनाथजी को प्रतिष्ठित करें।" मेरे एक लाख राजपूतों के सिर कट जायेंगे, उंसके बाद औरंगजेब इस मूर्ति को हाथ लगा सकेगा। इस पर गोपीनाथजी बड़े प्रसन्न होकर चांपासणी को लौटे और वि.सं. १७२८ (ई.स. १६७१) कार्तिक शुक्ल १५ को वहाँ से प्रस्थान कर मेवाड़ की तरफ चले। जब मेवाड़ की सीमा में पहुँचे तो महाराणा अगवानी कर श्रीनाथ जी को ले आये और बनास नदी के किनारे सिंहाड़ गाँव के पासवाले खेड़े में वि.स. १७२८ काल्गुन कृष्ण ७ को उनकी स्थापना की गयी। नाथद्वारे से दस मील उत्तर में राजसमुद्र के बाँध के पास ही काँकड़ोली गाँ बसा है। यहाँ वल्लभ–सम्प्रदाय का द्वारिकाधीश मन्दिर है। यहाँ की मूर्ति सात स्वरूपों में से एक है। अतः यह भी वैष्णवों का एक तीर्थ है और नाथद्वारे आने वाले वैष्णवों में अधिकांश यहाँ भी दर्शनार्थ आते हैं। औरंगजेब के भय से यह मूर्ति श्रीनाथजी से कुछ पहले मेवाड़ में लाकर स्थापित की गयी थी।

गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

कबिरा खड़ा बजार में

लोकतंत्र या तानाशाही

उत्तरप्रदेश में मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी क्या अब अदालत का दायित्व भी खुद संभालने लगे हैं। क्या जज बनकर अब इंसाफ वे ही करेंगे। ये सवाल इसलिए कि उन्नाव सामूहिक दुष्कर्म मामले में जिस भाजपा विधायक कुलदीप सेंगर पर पीड़ित परिवार ने आरोप लगाया है, उसे आदित्यनाथ योगी ने तलब किया था। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से राजधानी में मुलाकात कर विधायक महोदय ने अपनी सफाई पेश की। इसके बाद मीडिया से उन्होंने कहा कि यह उनके खिलाफ साजिश है। वह किसी भी जांच के लिए तैयार हैं। उनके ऊपर लगाए गए आरोप बेबुनियाद हैं। जबकि मुख्यमंत्री का कहना है कि मामले की जल्द से जल्द जांच कराकर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। यहां जल्द से जल्द का क्या मतलब है, समझ नहीं आ रहा। अगर यह मामला दो–चार दिन पहले का होता, और तब योगीजी तुरंत इंसाफ करने की बात कहते। तब तो उनकी न्यायप्रियता समझ में आती। लेकिन यह मामला तो पिछले साल जून का है। यानी भाजपा सरकार बनने के कुछ महीनों बाद ही भाजपा विधायक पर पीड़िता और उसके परिवार ने गैंगरेप का गंभीर आरोप लगाया था। उन्नाव के माखी थाना क्षेत्र की रहने वाली पीड़ित युवती का कहना है कि कुलदीप सिंह सेंगर और उसके गुर्गो ने बंधक बनाकर कई बार रेप किया। कायदे से किसी युवती के ऐसे आरोप पर तुरंत कार्रवाई होनी चाहिए थी, आरोपियों के खिलाफ पुलिस में मामला दर्ज होना चाहिए था। लेकिन बेटी बचाओ का नारा देने वाली भाजपा सरकार में ऐसा नहीं हुआ। युवती के पिता और चाचा ने हिम्मत कर खुद ही अदालत में १५६–३ के तहत अर्जी दाखिल की। किसी संज्ञेय मामले में अगर पुलिस एफआईआर दर्ज नहीं करती है, तो सीआरपीसी की धारा १५६/३ के तहत शिकायती पक्ष अदालत में सुनवाई की अपील कर सकता है। पीड़ित परिवार ने इस धारा का सहारा लिया यानी साफ है कि पुलिस ने उसकी शिकायत दर्ज नहीं की होगी। पुलिस ने विधायक महोदय पर तो कोई कार्रवाई नहीं की, अलबत्ता पीड़िता के पिता को इस ४ अप्रैल को जरूर कस्टडी में ले लिया। बताया जाता है कि इससे पहले ३ अप्रैल को कुलदीप सेंगर के भाई ने उन्हें पिटवाया भी था। ६ अप्रैल को पीड़ित युवती के पिता की पुलिस कस्टडी में ही मौत हो गई। पोस्टमार्टम रिपोर्ट कहती है कि बेरहमी से मार के कारण पीड़िता के पिता की मौत हुई। हालांकि यूपी के एडीजी ला एंड आर्डर का कहना है कि बिना जांच के किसी भी नतीजे पर पहुंचना जल्दबाजी होगी। तो साहब, जांच करिए तो सही। लगभग एक साल से एक युवती अपने ऊपर हुए अन्याय के लिए इंसाफ की गुहार लगा रही थी, उसका परिवार तमाम धमकियों के बीच जिंदा रहने की कोशिश कर रहा था। उसके पिता को न जाने किस जुर्म में पुलिस हिरासत में ले लिया गया, जहां उनकी मौत हो गई, जबकि जिस पर आरोप लगाया गया। वह खुलेआम मुख्यमंत्री से मिलकर आता है और पुलिस के साहब कह रहे हैं कि जांच के बिना किसी नतीजे पर पहुंचना जल्दबाजी होगी। समझ नहीं आता कि पुलिस और सरकार जनता की हिफाजत के लिए हैं या नेताओं की। फिलहाल पुलिस ने कुलदीप सेंगर के भाई अतुल सिंह सेंगर को गिरफ्तार किया है, लेकिन इसके बाद मामले की जांच किस गति से आगे बढ़ेगी, इस बारे में क्या कहा जा सकता है। सरकार ने जांच के लिए एसआईटी का गठन कर लिया है। लेकिन उसकी उपयोगिता भी तभी मानी जाएगी, दोषियों को कड़ी सजा मिलेगी। अभी तो ऐसी कोई सूरत दिख नहीं रही, क्योंकि सत्तारूढ़ दल के विधायक पर आरोप है और उसने अदालत से पहले अपनी सफाई मुख्यमंत्री के दरबार में पेश की है। लोकतंत्र में तो इंसाफ का तकाजा ऐसा नहीं होना चाहिए, यह तो राजशाही, तानाशाही तरीका लगता है।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 25 अप्रैल से 01 मई 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्केन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।